ओ३म्

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती रचित

संस्कृत-वाक्य-प्रबोधः

-शिक्षक [व्याकरण-अनुवाद आदि के अभ्यासों के साथ विशिष्ट संस्करण]

नवीन संस्कर्ता संशोधक तथा सम्पादक, प्रकाशक तथा मुद्रक—
वेदर्षि वेदाचार्य, वीरेन्द्र सरस्वती, ऐम० ए०, काव्यतीर्थ,
अध्यक्ष, विश्व वेदपरिषद्, आदर्श प्रेस, सी ८१७ महानगर, लखनऊ २२६००६ दूरभाष ७३५०१
२५० प्रतियाँ श्रावणी २०४९ वि०, १३ अगस्त १९९२ ई० मूल्य १०) दस रुपये

ओ३म्

संस्कृत-वाक्य-प्रबोधः (स्वयं-शिक्षकः)

रचयिता— महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

वक्ता सम्पादक— वेदर्षि वेदाचार्य वीरेन्द्र मुनि सरस्वती शास्त्री, एम० ए०, काव्यतीर्थ,

त: विश्व वेदपरिषद्, सी ८१७ महानगर, लखनऊ पिन २२६००६ (रजिस्टर्ड)

बार ५०० मुद्रक- आदर्श प्रेस लखनऊ मूल्य ५)

ओ३म्

संस्कृत-वाक्य-प्रबोधः
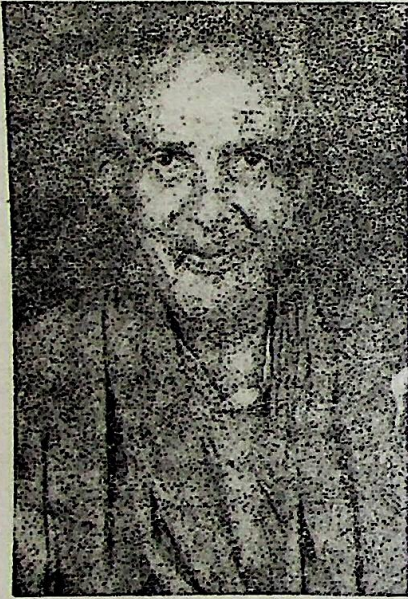
शुभाशंसा

वेदाचार्य [illegible] मुनि सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कृत-वाक्य-प्रबोध इस उद्देश्य से लिखा था कि संस्कृत पढ़नेवाले छोटे बालक-बालिकाओं को भी संस्कृत भाषा का अभ्यास हो जाये, जैसा कि उन्होंने इसकी भूमिका में लिखा है।

ऐसे उत्तम उद्देश्य से जिस ग्रन्थ की रचना महर्षि दयानन्द ने की उसका अधिकाधिक प्रचार सर्व साधारण जनता में होना चाहिए, और ऐसे संस्करण भी निकालने की आवश्यकता अनुभव की गयी कि जिससे इसके द्वारा संस्कृत व्याकरण तथा अनुवाद का भी अभ्यास बढ़ाया जा सके।

संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री, एम०ए०, काव्यतीर्थ ने संस्कृत-वाक्य-प्रबोध का यह नवीन परिवर्धित विशिष्ट संस्करण इसी उद्देश्य से लिखा और विश्व वेदपरिषद् की ओर से प्रकाशित कराया है।

इसमें स्थान-स्थान पर सन्धि-समास, शब्दों-धातुओं के रूप, अभ्यासार्थ अनुवाद के वाक्य आदि दे दिये गये हैं जिन से छात्रों का संस्कृत-भाषण के साथ-साथ व्याकरण आदि का ज्ञान भी बढ़ जायेगा।

मुझे निश्चय है कि संस्कृत-वाक्य-प्रबोध के बड़े परिश्रम से तैयार किये गये इस नवीन और परिवर्धित संस्करण को छात्र, शिक्षक तथा अन्य संस्कृत-प्रेमी अधिक उपयोगी पायेंगे, और सभी संस्कृत-कक्षाओं तथा पाठशालाओं में इसका उपयोग करके लाभ उठाया जायेगा।

निवेदकः—

धर्मानन्द सरस्वती, विद्यामार्तण्ड;

अध्यक्ष विश्व वेदपरिषद्, आनन्द-कुटीर, ज्वालापुर।

७-१०-१९७८

संस्कृत-वाक्य-प्रबोधः [स्वयं-शिक्षकः]

प्रस्तावना

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन-चरित और पत्र-विज्ञापन पढ़ने से विदित होता है कि उन्होंने संस्कृत भाषा के प्रचार के लिए कितना महान् परिश्रम किया। पहले वे संस्कृत में ही भाषण करते थे। वेदों का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सबका परम धर्म बताकर उसकी पूर्ति के लिए वे संस्कृत का पढ़ना अनिवार्य समझते थे। अंग्रेजी शिक्षा के भयंकर परिणाम जानकर महर्षि ने अनेक पत्रों में उसके पाठनार्थ धन-व्यय न करने का आदेश दिया और अनेक जगह संस्कृत पाठशालाएँ खुलवायीं। आरम्भ में डी० ए० वी० में भी संस्कृत अनिवार्य थी; परन्तु दुःख है कि अब दयानन्द-वैदिक नाम से चलने वाले आर्यसमाज के विद्यालयों में भी सब अनिवार्य नहीं।

महर्षि के संस्कृत-विषयक विचार जानने के लिए 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' पृष्ठ २५ १२२ १४७ १५२ २६४ २६५ २६७ २६८ ३२४ ३६६ ३६८ ३६९ ३८६ ४१६ और ४२६ देखने चाहिए।

जब बोलचाल की संस्कृत सीखने की पुस्तक माँगी जाने लगी तो महर्षि ने यह ग्रन्थ रचा, खेद है कि बहुत-से महर्षि-भक्त भी इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में जानते भी नहीं; उसे पढ़ना तो दूर रहा।

इस ग्रन्थ में छोटे-बड़े सब ५२ प्रकरण हैं जिनमें नित्यप्रति व्यवहार में आने वाले वाक्य संगृहीत हैं। महर्षि-मन्तव्य था— मनुष्य ईश्वरीय भाषा बोलें, एतदर्थ यह ग्रन्थ बनाया।

इसका पहला संस्करण वैदिक यन्त्रालय में छपा जो उस समय बनारस में था, अब अजमेर में है, अब से सौ वर्ष पूर्व फाल्गुन शुक्ल ११, संवत् १९३६ वि० (२२ मार्च १८८०) में प्रकाशित हुआ इसकी रचना-प्रकाशन-समय महर्षि-चित्त स्वस्थ न था, अतः उन्होंने अपने शिष्य-लेखक प० भीमसेन को प्रूफ-शोधन आदि सौंप दिया; उसके विश्वासघात-असावधानी और प्रेस-अव्यवस्था से इसमें कुछ अशुद्धियाँ रह गयीं जिन पर काशी ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा के प० अम्बिकादत्त व्यास, बाबू रामकृष्ण आदि ने 'अबोध-निवारण' पुस्तक छपाकर आक्षेप किये थे; जिनपर महर्षि ने श्री बख्तावर सिंह प्रबन्धक वैदिक यन्त्रालय काशी को श्रावण शुक्ल १३, संवत् १९३७ वि० के पत्र में लिखा—

जो संस्कृत-वाक्य-प्रबोध पर पुस्तक छपवाया है सो बहुत ठिकानों पर उनका लेख अशुद्ध है और कई एक ठिकानों पर अशुद्ध भी छपा है। इस अशुद्धि के कारण तीन हैं- एक शीघ्र बनना, मेरा चित्त स्वस्थ न होना; दूसरा— भीमसेन के आधीन शोधन होना और मेरा न देखना, न प्रूफ को शोधना; तीसरा— छापाखाने में उस समय कोई भी कम्पोजीटर बुद्धिमान् न होना, लैम्पों की न्यूनता होनी। इसके उत्तर में जो जो उनकी सच्ची बात है सो सो शोधक और छापा का दोष रहेगा। इस के खण्डन पर भीमसेन का नाम न लिखना किन्तु पण्डित ज्वालादत्त के नाम से छापना।

पत्र-व्यवहार पृष्ठ २२३

इसी प्रकार महर्षि के अन्य पत्रों में भी संस्कृत-वाक्य-प्रबोध की छपायी की भूलोंका उल्लेख है—

'वेदभाष्य का प्रूफ और छापना संस्कृत-वाक्य-प्रबोध के तुल्य न होगा। ... छापेवालों की भूल से छप गया। वहाँ 'एकत्रैकाङ्गुष्ठ एकत्र चतुरङ्गुलयः' ऐसा चाहिए, सो सुधार लीजिए'। (पृष्ठ ४०९)

आक्षेपों के उत्तर आर्यदर्पण पत्रिका के मई सन् १८८० अंक में पृष्ठ ११३-१२० पर छपे हैं।

इस ग्रन्थ का बहुत महत्त्व है, क्योंकि इसमें महर्षि की विचार-धारा संकलित हैं, हृदय के भाव ओजपूर्ण भाषा में, प्रत्यक्ष, वार्तालाप, प्रश्नोत्तर शैली में विद्यमान हैं। —वीरेन्द्र शास्त्री १-९-१९७८

ओ३म्

महर्षिकृतः, संस्कृत-वाक्य-प्रबोधः

भूमिका

मैंने इस 'संस्कृत-वाक्य-प्रबोध' पुस्तक को बनाना अवश्य इसलिए समझा है कि शिक्षा को पढ़ के कुछ कुछ संस्कृत भाषण का आना विद्यार्थियों को उत्साह का कारण है। जब वे व्याकरण के सन्धि-विषयादि पुस्तकों को पढ़लेंगे तब तो उनको स्वतः ही संस्कृत बोलनेका बोध हो जायगा, परन्तु यह जो जो संस्कृत बोलने का अभ्यास प्रथम किया जाता है, वह भी आगे आगे संस्कृत पढ़ने में बहुत सहाय करेगा। जो कोई व्याकरणादि ग्रन्थ पढ़े बिना भी संस्कृत बोलने में उत्साह करते हैं वे भी इसको पढ़ के व्यवहार-सम्बन्धी संस्कृत भाषा बोल और दूसरेका सुनके भी कुछ-कुछ समझ सकेंगे। जब बाल्यावस्था से संस्कृत के बोलने का अभ्यास होगा तो उसको आगे आगे संस्कृत बोलने का अभ्यास अधिक अधिक ही होता जायगा। और जब बालकभी आपस में संस्कृत भाषण करेंगे तो उनको देखकर जवान और वृद्ध मनुष्य भी संस्कृत बोलने में रुचि अवश्य करेंगे। जहाँ कहीं संस्कृत के नहीं जाननेवाले मनुष्यों के सामने अपना गुप्त अभिप्राय समझाना चाहें तो वहाँ संस्कृत भाषण काम आता है।

जब इसके पढ़ाने वाले विद्यार्थियों को ग्रन्थस्थ वाक्यों को पढ़ायें उस समय दूसरे वैसे ही नवीन वाक्य बनाकर सुनाते जायें, जिससे पढ़ने वालों की बुद्धि बाहर के वाक्यों में भी फैल जाय।

और पढ़ने वाले भी एक वाक्य को पढ़ के उसके सदृश अन्य वाक्यों की रचना भी करें कि जिससे बहुत शीघ्र बोध हो जाय, परन्तु वाक्य बोलने में स्पष्ट अक्षर, शुद्धोच्चारण, सार्थकता देश-काल-वस्तु के अनुकूल जो पद जहाँ बोलना उचित हो वहाँ बोलना और दूसरे के वाक्यों पर ध्यान देकर सुनके समझना। प्रसन्नमुख, धैर्य, निरभिमान और गम्भीरतादि गुणों को धारण करके, क्रोध, चपलता, अभिमान और तुच्छतादि दोषों से दूर रहकर अपने अथवा किसी के सत्य वाक्य का खण्डन और अपने अथवा किसी के असत्य का मण्डन कभी न करें और सर्वदा सत्य का ग्रहण करते रहें।

इस ग्रन्थ में संस्कृत वाक्य प्रथम और उनके सामने भावार्थ इसलिए लिखा है कि पढ़ने वालों को सुगमता हो और संस्कृत की भाषा और भाषा का संस्कृत भी यथायोग्य बना सकें।

काशी, फाल्गुन शुक्ला ११, १९३६ वि०

दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

संस्कृत-वाक्य-प्रबोधः

१. गुरु-शिष्य-वार्तालाप-प्रकरणम्

भोः शिष्य ! उत्तिष्ठ, प्रातः कालो जातः।	हे शिष्य उठ, सबेरा हुआ ।
उत्तिष्ठामि ।	मैं उठता हूं ।
अन्ये सर्वे विद्यार्थिनः उत्थिताः न वा ?	और सब विद्यार्थी उठे वा नहीं ?
अधुना तु न उत्थिताः खलु ।	अभी तो नहीं उठे हैं निश्चय ही ।
तान् सर्वान् अपि उत्थापय ।	उन सब को भी उठा दे ।
सर्वे उत्थापिताः ।	सब उठा दिये ।
सम्प्रति अस्माभिः किं कर्तव्यम् ?	स समय हमको क्या करना चाहिए ?
आवश्यकं शौचादिकं कृत्वा सन्ध्यावन्दनम् ।	आवश्यक शौच आदि करके सन्ध्योपासना ।
आवश्यक कृत्वा सन्ध्या उपासिता, अतः परम् अस्माभिः किं करणीयम् ?	आवश्यक करके सन्ध्योपासन कर लिया, इसके आगे हमको क्या करना चाहिए ?
अग्निहोत्रं विधाय पठत ।	अग्निहोत्र करके पढ़ो ।
पूर्वं किं किम् पठनीयम् ?	पहले क्या पढ़ना चाहिए ?
वर्णोच्चारण शिक्षाम् अधीध्वम् ।	वर्णोच्चारण शिक्षा को पढ़ो ।
पश्चात् किम् अध्येतव्यम् ?	पीछे क्या पढ़ना चाहिए ?
किञ्चित् संस्कृतोक्ति बोधः क्रियताम् ।	कुछ संस्कृत बोलने का ज्ञान किया जाय ।
पुनः किम् अभ्यसनीयम् ?	फिर क्या अभ्यास करना चाहिए ?
यथायोग्यव्यवहारानुष्ठानाय प्रयतध्वम्	यथोचित व्यवहार करने के लिए प्रयत्न करो ।
कुतः अनुचितव्यवहारकर्तुः विद्यैव न जायते ।	क्योंकि उलटे व्यवहारकर्ता को विद्या ही नहीं होती ।
को विद्वान् भवितुम् अर्हति ?	कौन विद्वान् होने के योग्य होता है ?
यः सदाचारी प्राज्ञः पुरुषार्थी भवेत् ।	जो सत्याचरण शील बुद्धिमान् पुरुषार्थी हो ।
कीदृशादाचार्यादधीत्य पण्डितःभवितुं शक्नोति?	कैसे आचार्यसे पढ़कर पण्डित हो सकताहै?
अनूचानतः ।	पूर्ण विद्यावान् से ।
अथ किम् अध्यापयिष्यते भवता ?	अब क्या पढ़ाया जायगा आप से ?
अष्टाध्यायी-महाभाष्यम् ।	अष्टाध्यायी और महाभाष्य ।
अनेन पठितेन किं भविष्यति ?	इसके पढ़ने से क्या होगा ?
शब्दार्थ-सम्बन्ध-विज्ञानम् ।	शब्द-अर्थ (और उनके) सम्बन्ध का ज्ञान ।

पुनः क्रमेण किं किमध्येतव्यम् ?	फिर क्रम से क्या क्या पढ़ना चाहिए ?
कल्प-निघण्टु-निरुक्त-छन्दो-ज्योतिषाणि वेदानामङ्गानि मीमांसा-वैशेषिक-न्याय-योग-सांख्य-वेदान्तानि उपाङ्गानि. आयुर्-धनुर्-गान्धर्व-अर्थान् उपवेदान्, ऐतरेय-शतपथ-साम-गोपथ ब्राह्मणानि अधीत्य ऋग्-यजुस्-साम-अथर्व वेदान् पठत ।	कल्प-निघण्टु-निरुक्त-छन्द और ज्योतिष वेदों के अङ्ग, मीमाँसा-वैशेषिक-न्याय-योग-सांख्य और वेदान्त उपाङ्ग, आयुर्-धनुर्-गान्धर्व-अर्थ उपवेदों को, ऐतरेय-शतपथ-साम-गोपथ ब्राह्मणग्रन्थोंको पढ़कर ऋग्-यजुस्-साम-अथर्व वेदों को पढ़ो ।
एतत्सर्वं विदित्वा किं कार्यम् ?	यह सब जानकर क्या करना चाहिए ?
धर्मजिज्ञासानुष्ठाने एतेषामेवाध्यापनंच ।	धर्म की जिज्ञासा-अनुष्ठान और इनका ही पढ़ाना।

महर्षि ने वर्णोच्चारणशिक्षा-व्यवहारभानु बनाये, पाणिनि ने अष्टाध्यायी, पतंजलि ने महाभाष्य

व्याकरण

शब्द-सूची—अब तक संस्कृत के ४८ शब्द आये हैं ।

१ क्रिया के वर्तमान काल [प्रेजेंट टेन्स] को लट् लकार कहते हैं । वर्तमाने लट् ।

२ पुरुष ३ होते हैं— प्रथम पुरुष [अंग्रेजी का थर्ड परसन]हिन्दी में अन्य पुरुष भी कहते हैं । मध्यम पुरुष [सेकण्ड परसन], उत्तम पुरुष [फर्स्ट परसन] । ये तीनों पुरुष सर्वनाम-क्रिया में होते हैं

३ वचन ३ होते हैं— एक वचन [सिंगुलर नम्बर], द्विवचन [डुवेल नम्बर], बहुवचन[प्लूरल नम्बर]

४ लिंग तीन होते हैं— पुल्लिङ्ग [मैस्कुलिन जेण्डर], स्त्रीलिंग [फेमिनिन], नपुंसकलिंग[न्युटर]

५ क्रिया और युष्मद्-अस्मद् सर्वनाम तीनों लिंगों में एक समान रहते हैं ।

पुरुष

पुरुष	एकवचन पु० स्त्री० नपुं०	द्विवचन पु० स्त्री० न०	बहुवचन पु० स्त्री० नपु०
प्रथम [थर्ड]	सः सा तत् [वह]	तौ ते ते [वे दो]	ते ताः तानि [वे]
मध्यम [सेकण्ड]	त्वम् [तू]	युवाम् [तुम दो]	यूयम् [तुम सब]
उत्तम [फर्स्ट]	अहम् [मैं]	आवाम् [हम दो]	वयम् [हम सब]

पठ् धातु के वर्तमान काल में लट् लकार के रूप

पुरुष	प्रत्यय एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थसहित रूप एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
प्रथम	अति	अतः	अन्ति	पठति	वह पढ़ता है	पठतः	वे दो पढ़ते हैं	पठन्ति	वे पढ़ते हैं
मध्यम	असि	अथः	अथ	पठसि	तू पढता है	पठथः	तुम दो पढ़ते हो	पठथ	तुम पढ़ते हो
उत्तम	आमि	आवः	आमः	पठामि	मैं पढ़ता हूं	पठावः	हम दो पढ़ते हैं	पठामः	हम पढ़ते हैं

रचना

इसी प्रकार तीनों पुरुषोंके कुल ९रूपों का क्रम ध्यान में रखकर चल-हस-लिख-खाद-गम् (गच्छ) वद-स्था (तिष्ठ ठहरना), उत्तिष्ठ, पा(पिब) पीना आदि क्रियाओं के रूप बोल और लिखकर समझें।

अनुवाद नियम १- जो पुरुष-वचन कर्ता में हो वही क्रिया में हो । नीचे लिखे की संस्कृत बनाओ-

वह पढ़ता है। वे दो लिखते हैं । वे हँसते हैं । तू चलता है। तुम दो खाते हो। तुम उठते हो । मैं अभी उठता हूं। हम दो सचमुच लिखते हैं। हम बैठते हैं । हे बालक ! उठ, सन्ध्याकाल हो गया।

कारक तथा विभक्तियाँ

कारक	अर्थ	विभक्ति	चिह्न	उदाहरण	अकारान्त के प्रत्यय			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	करनेवाला	प्रथमा	ने या कुछ नहीं	नर, नर ने	:	औ	आः	नरः	नरौ	नराः
कर्म	जिसे किया जाय	द्वितीया	को से	नर को, नर से (पूछो)	अम्	औ	आन्	नरम्	नरौ	नरान्
करण	साधन	तृतीया	से, के द्वारा	नर से, नर के द्वारा	एन	आभ्याम्	ऐः	नरेण	नराभ्याम्	नरैः
सम्प्रदान	जिसके लिए	चतुर्थी	को, के लिए	नर के लिए	आय	,,	एभ्यः	नराय	,,	नरेभ्यः
अपादान	अलग होना	पञ्चमी	से	नर से	आत्	,,	एभ्यः	नरात्	,,	,,
सम्बन्ध	रिश्ता	षष्ठी	का के की, रा रे री	नर का के की	स्य	योः	आनाम्	नरस्य	नरयोः	नराणाम्
अधिकरण	आधार		में पै पर	नर में नर पर	ए	योः	एषु	नरे	,,	नरेषु ।
सम्बोधन	बुलाना	प्रथमा	हे ओ अरे		कुछ नहीं	औ	आः	हे नर !	हे नरौ !	हे नराः!

टिप्पणी– हिन्दी में सर्वनाम आप के सम्बन्ध का चिह्न ना ने नी भी होता है, जैसे अपना अपने अपनी सर्वनाम में सम्बोधन नहीं होता । जिस शब्द में र या ष हो उसको तृतीया विभक्ति के एकवचन में न को ण हो जाने से एन के स्थान पर एण, और षष्ठी के बहुवचन में नाम् के स्थान पर णाम् होता है ।

रचना

नर के समान ही सब अकारान्त पुल्लिङ्ग शिष्य–राम–बालक–जन–पुरुष देव–छात्र–अध्यापक–गज–सिंह–वानर–पिक–शुक–बक–हंस आदि के रूप बोल बोल कर और लिख लिख कर अभ्यास करें ।

व्याकरण में पुल्लिंग तत्, सर्व और अस्मद्, युष्मद् के रूप

	एकव०	द्विव०	बहुव०	एकव०	द्विव०	बहुव०	एकव०	द्विवचन	बहुव०	एक०	द्वि०	बहु०
१	सः	तौ	ते	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	अहम्	आवाम्	वयम्	त्वं	युवाम्	यूयम्
२	तं	तौ	तान्	सर्वं	,,	सर्वान्	मां, मा	,, नौ	अस्मान्, नः	त्वां त्वा	,, वां	युष्मान्, वः
३	तेन	ताभ्याम्	तैः	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
४	तस्मै	,,	तेभ्यः	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः	मह्यम्, मे	,, नौ	अस्मभ्यम्, नः	तुभ्यम्, ते	,, वां	युष्मभ्यं वः
५	तस्मात्	,,	,,	सर्वस्मात्	,,	,,	मत्	,,	अस्मत्	त्वत्	,,	युष्मत्
६	तस्य	तयोः	तेषां	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकं, नः	तव, ते	युवयोः वां	युष्माकं, वः
७	तस्मिन्	,,	तेषु	सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु	मयि	,,	अस्मासु	त्वयि	,,	युष्मासु

अकारान्त नपुंसकलिंग फलम् के रूप १–२ विभक्तियों में फलम् फले फलानि, शेष में नर के समान हैं।

इसी प्रकार जलम्–बलम्–पानीयम्–भाजनम्–वनम्–ब्राह्मणम्–गृहम् आदि के रूप चलाओ ।

आज्ञा अर्थ में लोट् लकार (इम्परेटिव मूड) और विधि (चाहिए) अर्थ में लिङ् लकार

पुरुष	एक०	द्वि०	बहु०	रूप एक०	द्वि०	बहु०	प्रत्यय एक०	द्वि०	बहु०	रूप एक०	द्वि०	बहु०
प्रथम पु०	अतु	अताम्	अन्तु	पठतु	पठताम्	पठन्तु	एत्	एताम्	एयुः	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
				वह पढ़े	दो पढ़ें	वे पढ़ें				उसे पढ़ना चाहिए	दो को प०	अधिक का प०
मध्यम	अ	अतम्	अत	पठ	पठतम्	पठत	एः	एतम्	एत	पठेः	पठेतम्	पठेत
				तू पढ़	तुम दो पढ़ो	तुम पढ़ो				तुझे पढ़ना चाहिए	तुम दो को०	तुम्हें०
उत्तम	आनि	आव	आम	पठानि	पठाव	पठाम	एयम्	एव	एम	पठेयम्	पठेव	पठेम
				मैं पढ़ूँ	हम दो पढ़ें	हम पढ़ें				मुझे पढ़ना चाहिए	हम दो को पढ़ना०	हमें पढ़ना०

इसी प्रकार उत्तिष्ठ-उत्थापय-चल-हस-खाद-वद-लिख-नृत्य-पिब-गच्छ आदि के रूप बनाओ।

प्रत्यय

क्त (त) भूतकालमें होता है- जात:[हुआ], उत्थित:[उठा], उत्थापित:[उठाया] उपासिता[उपासना की।

क्त्वा (त्वा) करके अर्थ में होता है- कृत्वा [करके] गत्वा [जाकर]। ऐसे ही खादित्वा-हसित्वा-पठित्वा-लिखित्वा-चलित्वा-स्थित्वा -पीत्वा-क्रीडित्वा आदि बनाओ।

किन्तु यदि क्रिया में उपसर्ग लगा हो तो ल्यप् [य] प्रत्यय लगाया जाता है जैसे विधाय [करके] आगत्य [आकर] अधीत्य [पढ़कर] आदि।

तव्यत् और अनीयर् - 'चाहिए' अर्थ में होते हैं- कर्तव्यम [करना चाहिये]। ऐसे ही स्नातव्य-पठितव्य-लिखितव्य-अध्येतव्य-प्रयतितव्य और करणीय-पठनीय-स्मरणीय-अभ्यसनीय आदि हैं।

तुमुन् [तुम]- 'करने को' अर्थ में होता है- कर्तुं [करने को] पठितुम [पढ़ने को] खादितुं अत्तुम् [खाने को] आदि। अंग्रेजी में यह 'टू' होकर क्रिया से पहले लगने लगा- गन्तुं [टू गो] अत्तुं टू ईट हो गया। यह पूर्वकालिक क्रिया (इनफिनिटिव मूड) कहाती है।

अनुवाद और रचना

१ कौन महान् हो सकता है? २ जो धर्मात्मा पुरुष हो। ३ मुझे बली होना चाहिए। ४ मनुष्य कैसा हो? ५ मनुष्य सदाचारी हो। ६ आप पढ़ने को जायेँ। ७ वेदांगों और ब्राह्मण-ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए। ८ पश्चात् हम क्या करें? ९ प्रातः हम वेद पढ़ें। १० मैं वेदों का पढने को प्रस्तुत होता हूं।

[भवान् (आप)के साथ क्रिया में प्रथम पुरुष आयेगा।]

खाली स्थान भरो- १ कः ज्ञानी ... अर्हति? २ यः सदाचारी ...। ३ ... बलवान् भवेयम्। ४. वयं वेदान् ...। ५.... आचार्यात् अध्येतव्यम्। ६.कः ......शक्नोति? ७.एतद् विदित्वा किं ...। ८. ... ... ब्राह्मणानि सन्ति। ९. .. .. वेदान् पठत। १०. वयं ... अधीत्य विद्वांसः ...।

सन्धि और समास

अक्षरों के मेल से यदि कुछ परिवर्तन हो तो उसे सन्धि कहते हैं; शब्दों को मिलाकर संक्षेप करना समास है। शब्द के अन्तिम व्यञ्जन में अगले शब्द के स्वर का मिलाना मात्र संयोग है, सन्धि नहीं। सन्धि ३ प्रकार की है- स्वर, व्यञ्जन और विसर्ग। कालः की विसर्ग : का ओ होकर कालो हो जाना विसर्ग-सन्धि है। शौचादिकं में शौच के च के अ से आदिकं का आ मिलकर बड़ा आ होना दीर्घ-स्वर-सन्धि है। ऐसे ही धर्म-अनुष्ठान मिलकर दीर्घ-स्वर-सन्धि होकर धर्मानुष्ठान बन गया।

एकपद, धातु-उपसर्ग और समास में ही सन्धि अनिवार्य है अन्यत्र नहीं, वह वाक्य में ऐच्छिक है। व्यञ्जनों के मेल से हुआ परिवर्तन व्यंजन-सन्धि है जैसे सत्-चित् में त को च होकर सच्चित् हुआ।

१. दीर्घ-स्वर-सन्धि-नियम सूत्र— अकः सवर्णे दीर्घः (अष्टाध्यायी ६.१.१०१)

अक् (अ-इ-उ-ऋ) से परे यदि समान वर्ण हो तो दीर्घ अ-अ आ। इ-इ ई। उ-उ ऊ। ऋ-ऋ ॠ हो जाये — शब्द-अर्थ शब्दार्थ। वेद-अङ्ग वेदाङ्ग। उप-अङ्ग उपाङ्ग। हिम-आलय हिमालय विद्या-अर्थी विद्यार्थी। जिज्ञासा-अनुष्ठान जिज्ञासानुष्ठान। दया-आनन्द दयानन्द। विद्या-आलय विद्यालय। हरि-ईश हरीश। भानु-उदय भानूदय। पितृ-ऋण पितॄण।

२. गुण-स्वर-सन्धि का सूत्र- आद् गुणः (६.१.८७)

अ से आगे इ-उ-ऋ-लृ परे रहते गुण (क्रमशः ए-ओ अर्-अल्) हो जाये जैसे— अ-इ ए- वीर-इन्द्र वीरेन्द्र। अ-उ ओ वर्ण-उच्चारण वर्णोच्चारण। महा-ऋषि महर्षि। त वल्कार॥

२. नाम-निवास-स्थान-प्रकरणम् ।

तव किम् नाम अस्ति? देवदत्तः । तेरा क्या नाम है? देवदत्त ।
को ऽभिजनो युवयोर् वर्तते? कुरुक्षेत्रम् । कौन जन्मदेश तुम दोनों का है? कुरुक्षेत्र ।
युष्माकं जन्मदेशः को विद्यते? पञ्चालाः । तुम्हारा जन्मदेश कौन है? पंजाब ।
भवन्तः कुत्रत्याः? वयं दाक्षिणात्याः स्मः । आप कहाँ के हैं? हम दक्षिणी हैं ।
तत्र का पूर् वः? मुम्बापुरी । वहाँ कौन नगरी तुम्हारी (है)? मुम्बई ।
इमे क्व निवसन्ति? नयपाले । ये लोग कहाँ रहते हैं? नयपाल में ।
अयङ्किम् अधीते? व्याकरणम् यह क्या पढ़ता है? व्याकरण को ।
त्वया किम् अधीतम्? न्यायशास्त्रम् । तूने क्या पढ़ा है? न्यायशास्त्र ।
अयं भवदीयश् छात्रः किं प्रचर्चयति? यह आपका विद्यार्थी क्या पढ़ता है?
ऋग्वेदम् । ऋग्वेद को ।
त्वङ्किङ्कर्तुङ्गच्छसि? पाठाय व्रजामि । तू क्या करनेको जाता है? पढ़ने को जाता हूं ।
कस्माद् अधीषे? यज्ञदत्तात् । किससे पढ़ता है? यज्ञदत्त से ।
इमे कुतो ऽधीयते? विष्णुमित्रात् । ये किससे पढ़ते हैं? विष्णुमित्र से ।
त्वयि पठति कियन्तः संवत्सराः व्यतीताः? पंच । तुझे पढ़ते हुए कितने वर्ष बीते ? ५ ।
भवान् कति वार्षिकः? त्रयोदश वार्षिकः । आप कितने वर्षके हुए? तेरह वर्ष के ।
त्वया पठनारम्भः कदा कृतः? तूने पढ़ने का आरम्भ कब किया?
यदा अहम् अष्टवार्षिकः अभूवम् । जब मैं ८ वर्ष का हुआ था ।
तव मातापितरौ जीवतो न वा? जीवतः । तेरे मातापिता जीते हैं वा नहीं? जीते हैं ।
तव कति भ्रातरो भगिन्यश्च? तेरे कितने भाई-बहिन हैं?
त्रयो भ्रातरः एका च भगिनी अस्ति । तीन भाई और एक बहिन है ।
तेषु त्वं ज्येष्ठः, स, सा वा? उनमें तू बड़ा है अथवा वे अथवा वह?
अहम् एवाग्रजो ऽस्मि । मैं ही सबसे पहले जन्मा हूं ।
तव पितरौ विद्वांसौ न वा? तेरे माता-पिता विद्वान् हैं वा नहीं?
महा विद्वांसौ स्तः । बड़े विद्वान् हैं ।
तर्हि त्वया पित्रोःसकाशात्कुतो न विद्यागृहीता? तो तूने मातापिताके पास क्यों न विद्या ली?
अष्टम वर्ष पर्यन्तङ्गृहीता । आठवें वर्ष पर्यन्त ली थी ।
मातृमान पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो श्रेष्ठ माता पिता आचार्य वाला पुरुष

वेद इति शास्त्रविधेः ।	विद्वान् हो यह शास्त्र की विधि होने से।
अन्यत् च, गृहे कार्यबाहुल्येन निरन्तरं अध्ययनम् एव न जायते।	और भी घरमें कार्य के अधिक से लगातार अध्ययन ही नहीं होता।
अतः परं कियद् वर्ष पर्यन्तम् अध्येष्यसे?	इसके आगे कितने वर्ष पर्यन्त पढ़ेगा?
पञ्चत्रिंशद् वर्षाणि ।	३५ वर्ष (वक)।

व्याकरण

इस प्रकरण के ३३ नये शब्द जोड़कर कुल ८१ शब्द हुए।

संस्कृत में ४ प्रकार के शब्द हैं– १ नाम सर्वनाम, २ आख्यात (क्रिया) [दोनोंके रूप बदलते हैं], ३ उपसर्ग, ४ निपात (अव्यय) इनका व्यय नहीं होता, रूप नहीं बदलते, सब लिङ्ग-विभक्ति-वचनों में समान रहते है। सब उपसर्ग २२ हैं, ये क्रिया में पहले लगकर उनका अर्थ विशेष कर देते हैं।

प्र-परा-अप-सम्-अनु-अव-निस्-निर्-दुस्-दुर्-वि-आङ्-नि-अधि-अपि-अति-सु-उत्-अभि-प्रति-परि-उप। ये प्रादि उपसर्ग [गति] वेद में क्रिया के बाद या व्यवधान में भी लगाये जाते हैं।

शब्द-रूप ६. सर्वनाम पुलिङ्ग भवान् (आप)   ७. स्त्रीलिङ्ग भवती

विभक्ति	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	एक वचन	द्विवचन	बहु वचन	अर्थ
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	भवती	भवत्यौ	भवत्यः	आप आप ने
द्वितीया	भवन्तम्	,,	भवतः	भवतीम्	,,	भवतीः	आप को
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः	आप से
चतुर्थी	भवते	,,	भवद्भ्यः	भवत्यै	,,	भवतीभ्यः	आप के लिए
पंचमी	भवतः	,,	,,	भवत्याः	,,	,,	आप से
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्	,,	भवत्योः	भवतीनाम्	आपका-के-की
सप्तमी	भवति	,,	भवत्सु	भवत्याम्	,,	भवतीषु	आप में, पर

क्रिया के रूप ४– अस् धातु (होना) वर्तमान काल लट् लकार

पुरुष	एक वचन		द्वि वचन		बहु वचन	
प्रथम	अस्ति	वह है	स्तः	वे दो हैं	सन्ति	वे हैं
मध्यम	असि	तू है	स्थः	तुम दो हो	स्थ	तुम हो
उत्तम	अस्मि	मैं हूं	स्वः	हम दो हैं	स्मः	हम हैं

विसर्ग सन्धि– सूत्र ३. विसर्जनीयस्य सः। ४. ससजुषो रुः। ५. अतो रोर् अप्लुताद् अप्लुते।
विसर्ग के स्थान पर स हो– पुनः–ते पुनस्ते। भगिन्यः–च भगिन्यश्च (: को स, स को श हुआ।)
स का रु [र्] होता है– युवयोस्–वर्तते युवयोर्वर्तते। अप्लुत अ के बाद रु को उ हो यदि अ परे हो– कः–अभिजनः, कर्, क रु, क उ, [अ–उ मिलकर ओ, को अभिजनः हो गया।

पूर्वरूप स्वर सन्धि सूत्र ६– एङः पदान्तादति (६–१–१०९) पद के अन्त के ए ओ से अ परे रहते अ को पूर्व का रूप हो जाये। इसे बताने के लिए अ कीजगह अवग्रह चिह्न ऽ लगाते हैं– को-अभिजनः कोऽभिजनः। कुतो–अधीयते कुतोऽधीयते।

समास १. द्वन्द्व- सूत्र ७- चार्थे द्वन्द्वः। दो शब्दों के बीच में 'च'(और) को हटाने से दो शब्दों का जोड़ा बन जाने से यह द्वन्द्व समास है– माता च पिता च माता–पितरौ। एकशेष से पितरौ हुआ।

४.६.८० को दिवङ्गत श्रीमती मेवातीदेवी
स्वर्गीया धर्मपत्नी की स्मृति में श्री वेदप्रिय आर्य लखनऊ ने ५००) प्रकाशन-सहायतार्थ दिये,

....

संस्कृत में अनुवाद करो– १ तुम दोनों का क्या नाम है? २ तू कहाँ रहता है ? ३ तेरे माता-पिता हैं वा नहीं ? ४ वह व्याकरण पढ़ता है। ५ मैं पैंतीस वर्ष का हूं। ६ मेरे ५ भाई हैं। ७ आपकी कितनी बहिनें हैं ? ८ आपका घर कहाँ है ? ९ घर में कौन कौन रहता है ? १० हम संस्कृत पढ़ें।

रिक्त स्थान भरो और संस्कृत में उत्तर दो–
१ ...जन्मदेशः कः ...? २ इमे...निवसन्ति? ३ तव...स्तः न वा; ४ भवान्...निवसति ? भवतः किन्नाम ?

संस्कृत में उत्तर दो–
१ तव किं नामास्ति? २ त्वं कुत्र निवससि ; भवान् किं किं पठति ? ४ तव कति भ्रातरः सन्ति ? भवान् कति वार्षिकः ?

३. गृहस्थाश्रम प्रकरणम्

पुनस्ते का चिकीर्षास्ति ? गृहाश्रमस्य।	**फिर तेरी क्या करने की इच्छा है? गृहाश्रम की।**
किं च भोः पूर्णविद्यस्य जितेन्द्रियस्य परोपकार करणाय संन्यासाश्रमग्रहणं शास्त्रोक्तमस्ति तत् न करिष्यसि ?	**क्यों जी, पूर्ण विद्या वाले जितेन्द्रिय का परोपकार के लिए संन्यासाश्रम ग्रहण करना शास्त्रोक्त है उसको न करोगे ?**
किं गृहाश्रमे परोपकारो न भवति ?	**क्या गृहाश्रम में परोपकार नहीं होता ?**
यादृशः संन्यासाश्रमिणा कर्तुं शक्यते न तादृशो गृहाश्रमिणा, अनेककार्यैः प्रतिबन्धकत्वेनास्य सर्वत्र भ्रमणाशक्यत्वात्।	**जैसा संन्यासाश्रमी से किया जा सकता है वैसा गृहाश्रमी से नहीं, अनेक कार्यों से प्रतिबन्धकता से इसका सर्वत्र भ्रमण अशक्य होने से**

व्याकरण शब्द-धातु-रूप

६ नये शब्द जोड़ कर सब ८७ हुए । संन्यासाश्रमिन्-गृहाश्रमिन् के रूप करिन्(हाथी)के समान है—

विभक्ति	करिन् एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अरि एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
१	करी	करिणौ	करिणः	अरिः	अरी	अरयः	शत्रु, ने
२	करिणम्	,,	,,	अरिम्	,,	अरीन्	को
३	करिणा	करिभ्याम्	करिभिः	अरिणा	अरिभ्याम्	अरिभिः	से, द्वारा
४	करिणे	,,	करिभ्यः	अरये	,,	अरिभ्यः	के लिए
५	करिणः	,,	,,	अरेः	,,	,,	से
६	,,	करिणोः	करीणाम्	,,	अर्योः	अरीणाम्	का के की
७	करिणि	,,	करिषु	अरौ	,,	अरिषु	में पर
सम्बोधन	हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः	हे अरे	हे अरी	हे अरयः	हे अरे ओ

अरि के समान इकारान्त पुल्लिङ्ग हरि-कवि-मुनि आदि के रूप चलेँगे । अभ्यास करो । इस पाठ में तृतीया एकवचन में करिणा के समान ही 'आश्रमिणा' प्रयुक्त हैं ।

कृ धातु-रूप वर्तमान काल में लट् लकार — भविष्यत्काल में लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम	करोमि	कुर्वः	कुर्मः	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लृट् में करिष्यति के समान धातु-प्रत्यय के बीच में 'इष्य' लगाकर भविष्यति पठिष्यति आदि बनेँगे । आकारान्त या पा स्था आदि में केवल स्य लगकर यास्यति पास्यति स्थास्यति आदि बनेँगे ।

सन्धि-विच्छेद- पुनः-ते । चिकीर्षा-अस्ति । भ्रमण-अशक्य । जित-इन्द्रिय । पर-उपकार ।

समास २— बहुव्रीहि

इसमें प्रयुक्त पदों से अन्य पद प्रधान होता है जैसे पूर्णविद्य, विग्रह- पूर्ण है विद्या जिसकी वह जितेन्द्रियः— जितानि इन्द्रियाणि येन सः ।

५- अनुवाद- हिन्दी की संस्कृत बनाओ-

१ क्या तुम परोपकार को करोगे ? २ हम परोपकार को करेंगे । ३ वह यज्ञ करेगा । ४ क्या तू सन्ध्या नहीं करेगा ? ५ मैं प्रातः सायं सन्ध्या को अवश्य करूँगा । ६ क्या तुम दोनों वेद पढ़ोगे ? ७ हम दोनों वेद पढ़ेँगे । ८ क्या आप अनुवाद करेंगे? ९ वे अनुवाद करेँगे । १० हम सदा सत्य बोलेंगे ।

५ रचना- १ गृहाश्रमी के रूप लिखो । २ चल के लृट् में रूप लिखो । ३ सन्धि करो- वेद-उक्त, ब्रह्मचर्य-आश्रम, देव-इन्द्र, नमः-ते, महा-आशय । ४ विग्रह-सहित समास बताओ— महाशय, पूर्णायु, जित-क्रोधः, महा-यशः ।

***

संस्कृत-वाक्य-प्रबोधः

४. भोजन-प्रकरणम्

नित्यः स्वाध्यायो जातः भोजन-समयः आगतः, गन्तव्यम् ।	नित्य का पढ़ना-पढ़ाना हो गया, भोजन-समय आया, चलना चाहिए ।
तव पाकशालायां प्रत्यहं भोजनाय किं किं पच्यते ?	तुम्हारी पाकशाला में प्रतिदिन भोजन के लिए क्या क्या पकाया जाता है ?
शाक सूप औदश्वित्क ओदन अपूपादयः ।	शाक, दाल, कढ़ी, भात और पुआ आदि ।
किं वः पायसादिमधुरेषु रुचिर् नास्ति ?	क्या तुम्हारी खीर आदि मीठोंमें रुचि नहीं है?
अस्ति खलु परन्तु एतानि कदाचित् कदाचिद् भवन्ति ।	है सही, परन्तु ये भोजन कभी कभी होते हैं ।
कदाचित् शष्कुली श्रीखण्डादयोऽपि भवन्ति न वा ?	कभी पूरी कचौड़ी शिखरन आदि भी होते हैं वा नहीं ?
भवन्ति, परन्तु यथर्तुयोगम् ।	होते हैं, परन्तु जैसा ऋतु का योग हो
सत्यम्, अस्माकम् अपि भोजनादिकम् एवम् एव निष्पद्यते ।	ठीक है, हमारा भी भोजन आदि ऐसे ही बनता है ।
त्वं भोजनङ्करिष्यसि न वा ?	तू भोजन करेगा वा नहीं ?
अद्य न करोमि, अजीर्णता अस्ति ।	आज नहीं करता, अजीर्णता है ।
अधिक भोजनस्य इदमेव फलम् ।	अधिक भोजन का यही फल है ।
बुद्धिमता तु यावत् जीर्यते तावद् एव भुज्यते ।	बुद्धिमान् से तो जितना पचाया जाता है उतना ही खाया जाता है ।
अति स्वल्पे भुक्ते शरीर-बलं ह्रसति अधिके च ।	बहुत कम खाने में शरीर का बल घटता है और अधिक में भी ।
अतः सर्वदा मिताहारी भवेत् ।	इससे सदा मित आहार वाला होवे ।
योऽन्यथाहार-व्यवहारौ करोति स कथं न दुःखी जायेत ?	जो उलटा आहार-व्यवहार करता है वह क्यों न दुःखी होवे ?
येन शरीरात् श्रमो न क्रियते स शरीर-सुखं नैव आप्नोति ।	जिससे शरीर से श्रम नहीं किया जाता वह शरीर के सुख को नहीं प्राप्त होता ।

येनात्मना पुरुषार्थो न विधीयते	जिससे आत्मा से पुरुषार्थ नहीं किया जाता
तस्यात्मनो बलमपि न जायते ।	उसका आत्मा का बल भी नहीं होता ।
तस्मात् सर्वैर्मनुष्यैर्यथाशक्ति	इससे सब मनुष्यों को शक्ति के अनुसार
सत्क्रिया नित्यं साधनीया ।	उत्तम क्रिया नित्य सिद्ध करनी चाहिए ।
भो देवदत्त ! त्वामहं निमन्त्रये ।	हे देवदत्त ! मैं तुझको निमन्त्रित करता हूं ।
मन्येऽहं कदा खलु आगच्छेयम् ?	मैं मानता हूं, कब आऊँ ?
श्वो द्वितीय प्रहरमध्ये आगन्तव्यम् ।	कल दोपहर मध्य में आना चाहिए ।
आगच्छ भो ! आसनं अध्यास्व ।	आइऐ जी, आसन पर बैठिए ।
भवता ममोपरि महती कृपा कृता ।	आपने मुझ पर बड़ी कृपा की ।

शब्द-संख्या

इस प्रकरण में नये आये ३४ शब्द पिछले ८७ में मिलाकर अबतक कुल संस्कृत शब्द १२१ हुए ।

नकारान्त पुल्लिङ्ग १०. आत्मन् शब्द के रूप

विभक्ति	एक वचन	द्विवचन	बहु वचन	अर्थ
१	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः	आत्मा ने
२	आत्मानम्	,,	आत्मनः	को
३	आत्मना	आत्मभ्याम	आत्मभिः	से
४	आत्मने	,,	आत्मभ्यः	के लिए
५	आत्मनः	,,	,,	से
६	,,	आत्मनोः	आत्मनाम्	का के की
७	आत्मनि	,,	आत्मसु	में पर
सम्बोधन	हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः	हे अरे

धातु-रूप--आत्मनेपदी मन्य धातु के वर्तमाने लट् लकारः

धातुएँ ३ प्रकार की हैं- परस्मैपदी भू, पठ् आदि, आत्मनेपदी एध् मन्य आदि, उभयपदी कृ आदि ।

पुरुष	प्रत्यय एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अते	एते	अन्ते	मन्यते	मन्येते	मन्यन्ते
मध्यम	असे	एथे	अध्वे	मन्यसे	मन्येथे	मन्यध्वे
उत्तम	ए	आवहे	आमहे	मन्ये	मन्यावहे	मन्यामहे

इसी प्रकार एध्-जीर्य-पच्य-निष्पद्य-विधीय-क्रिय-जाय-निमन्त्रय आदि के रूप बोलो-लिखो ।

अभ्यास ३- संस्कृत बनाओ- सन्ध्याकाल आगया । मैं भोजन नहीं करूँगा । हम कल अनुवाद करेंगे । मैं तुझे निमन्त्रण देता हूं । तुम और हम वैदिकधर्म मानते हैं ।

३. समास पूर्वपद-प्रधान अव्ययीभाव

जिनमें पहला पद अव्यय और मुख्य हैं वे अव्ययीभाव हैं-यथा शक्ति [शक्ति के अनुसार], प्रत्यहं [प्रत्येक दिन], यथायोग्यम्, आजन्म [जन्म पर्यन्त, यथर्तु योगम् आदि ।

१- देश-देशान्तर प्रकरणम्

भवानेतान् जानातीमे महाविद्वांसः सन्ति।	आप इनको जानते हैं. ये बड़े विद्वान् हैं।
किन्नामानः एते, कुत्रत्याः खलु ?	क्या नाम वाले हैं ये, कहा के हैं ?
अयं यज्ञदत्तः काशी-निवासी।	यह यज्ञदत्त काशी का निवासी है।
विष्णुमित्रोऽयं कुरुक्षेत्र-वास्तव्यः।	यह विष्णुमित्र कुरुक्षेत्र में बसता है।
सोमदत्तोऽयं माथुरः।	यह सोमदत्त मथुरा में रहता है।
अयं सुशर्मा पर्वतीयः।	यह सुशर्मा पर्वत पर रहता है।
अयमाश्वलायनो दाक्षिणात्योऽस्ति।	यह आश्वलायन दक्षिणी है।
अयं जयदेवः पाश्चात्यो वर्तते।	यह जयदेव पश्चिम देश वासी है।
अयङ्कुमारभट्टो वाङ्गो विद्यते।	यह कुमारभट्ट बङ्गाली है।
अयङ्कापिलेयः पाताले निवसति।	यह कापिलेय अमेरिका में रहता है।
अयं चित्रभानुर्हरिवर्षस्थः।	यह चित्रभानु हरिवर्ष यूरोप में रहता है।
इमौ सुकाम-सुभद्रौ चीननिकायौ।	ये सुकाम और सुभद्र चीन के वासी हैं।
अयं सुमित्रो गन्धार-स्थायी।	यह सुमित्र कन्धार का रहने वाला है।
अयं सुभटो लङ्काजः।	यह सुभट लङ्का में जन्मा है।
इमे पंच सुवीरातिबल सुकर्म सुधर्म-शतधन्वानो मारवः।	ये ५ सुवीर अतिबल सुकर्म सुधर्म शतधन्वा मारवाड़ के हैं।
एते मयामन्त्रिताः स्वस्वस्थानादागताः।	ये मेरे बुलाये हुए अपने अपने घरसे आये हैं।
इमे नव शिव कृष्ण गोपाल माधव सुचन्द्र-प्रक्रम भूदेव चित्रसेन महारथा अत्रत्याः।	ये नौ शिव कृष्ण गोपाल माधव सुचन्द्र-प्रक्रम भूदेव चित्रसेन महारथ इस देशके हैं।
अहोभाग्यं मे यद् भवत्कृपया एतेषामपि समागमो जातः।	मेरा बड़ा भाग्य है कि आपकी कृपासे इन का भी मिलाप हुआ।
अहमपि सभवतः सर्वान् एतान् निमन्त्रयितुमिच्छामि।	मैं भी आपके समेत इन सब को निमन्त्रित करना चाहता हूं
अस्माभिर्भवन्निमन्त्रणमङ्गीकृतम्।	हमने आपका निमन्त्रण स्वीकार किया।
प्रीतोऽस्मि परन्तु भवद्भोजनार्थं किङ्किं पक्तव्यम् ?	प्रसन्न हूं परन्तु आपके भोजन के लिए क्या क्या पकाया जाये ?

यद्यद् भोक्तुमिच्छास्ति तत्तदाज्ञाप्यन्तु । जो जो खानेकी इच्छा है उस उसकी आज्ञा दें।
भवान् देशकालज्ञः, कथनेन किम्, आप देश काल को जानते हैं; कहने से क्या ।
यथायोग्यमेव पक्तव्यम् । यथायोग्य ही पकाना चाहिए ।
सत्यम् एवमेव करिष्यामि । ठीक है, ऐसा ही करूँगा ।
उत्तिष्ठत ,भोजन-समय आगतः उठिये, भोजन-समय आया,
पाकः सिद्धो वर्तते । पाक तय्यार है ।
भो भृत्य! पाद्यमर्घ्यमाचमनीयजलं देहि । हे नौकर ! पग-हाथ-मुख धोने,पीने का जल दे ।
इदमानीतम्, गृह्यताम् । यह लाया, लीजिए ।
भो पाचकाः!सर्वान्पदार्थान् क्रमेण परिवेविष्ट । हे पाचको! सब पदार्थों को क्रमसे परोसो,
भुंजीध्वम्,भोजनस्य सर्वेपदार्थाःश्रेष्ठाः न वा? खाइए, भोजनके सब पदार्थ अच्छे हैं वा नहीं?
अत्युत्तमाः सम्पन्नाः । किं कथनीयम् ! बहुत उत्तम हुए हैं, क्या कहना है !
भवता किंचित्पायसं ग्राह्यं यस्येच्छास्ति वा? आप थोड़ीखीर लीजिए वा जिसकी इच्छाहो।
प्रभूतं भुक्तम्, तृप्ताः स्मः । तर्हि उत्तिष्ठत । बहुत खाया, तृप्त होगये हैं। तो उठिए ।
जलं देहि। गृह्यताम्,ताम्बूलादीन्यानीयन्ताम् । जल दे, लीजिए, पान-इलायची आदि ला ।
इमानि सन्ति, गृह्णन्तु । ये हैं । लीजिए ।

व्याकरण-रचना-अभ्यास

शब्द-सूची— इस प्रकरण के ४० नवीन शब्द जोड़ने से सब १६१ संस्कृत शब्द हुए ।
११ वाँ शब्द-रूप— सर्वनाम पुल्लिङ्ग इदम् [अयम्] के रूप । (सम्बोधन नहीं होता ।)

विभक्ति	एक वचन	अर्थ	द्विवचन	अर्थ	बहु वचन	अर्थ
१	अयम्	यह	इमौ	ये दो	इमे	ये [दो से अधिक]
२	इमम्	इसे	;;	इन दो को	इमान्	इनको; इन्हें
३	अनेन	इससे	आभ्याम	;; से	एभिः	इन से
४	अस्मै	इस के लिए	,,	;; के लिए	एभ्यः	इन के लिए
५	अस्मात्	,, से	;;	,, से	,,	;; से
६	अस्य	इस का के की	अनयोः	,, का के की	एषाम्	,, का के की
७	अस्मिन्	,, में पर	,,	,, में पर	एषु	,, में पर

नपुंसक लिङ्ग इदम्

१	इदम्	यह वस्तु	इमे	ये दो	इमानि	ये दो से अधिक वस्तुएँ

द्वितीया प्रथमा-समान, शेष ३ से ७ विभक्तियों तक रूप पुल्लिङ्ग-समान होते हैं ।

सन्धि-विच्छेद — जानाति-इमे जानातीमे दीर्घ सन्धि । मित्राः-अयम् मित्रोऽयम् विसर्ग,पूर्वरूप ।
यस्य-इच्छा-अस्ति यस्येच्छास्ति गुण-दीर्घ सन्धि । ताम्बूल आदीनि ताम्बूलादीनि दीर्घ-स्वर-सन्धि ।

८. धातु-रूप ज्ञा धातु [जानना] परस्मैपदी वर्तमाने लट् लकार

पुरुष	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन	अर्थ
प्रथम	जानाति	जानीतः	जानन्ति	वह-वे दो-वे जानते हैं
मध्यम	जानासि	जानीथः	जानीथ	तू-तुम दो-तुम जानते हो
उत्तम	जानामि	जानीवः	जानीमः	मैं-हम दो-हम जानते हैं

इस के भविष्यत्काल लृट् लकार में स्य लगाकर ज्ञास्यति आदि रूप बनाओ ।

यण् स्वर-सन्धि सूत्र- ७. इको यणचि [इ-उ-ऋ-लृ को क्रमसे य-व-र्-ल हों स्वर परे रहते]

त्यप् प्रत्यय- अव्यय से होता है जैसे अत्रत्यः; तत्रत्यः, पाश्चात्यः, दाक्षिणात्यः आदि ।

अनुवाद संस्कृत में करो- १- क्या आप संस्कृत भाषा को जानते हैं ? २- हाँ, हम जानते हैं । ३- वे वेदों को पढ़ते हैं । ४- आप कहाँ के हैं ? ५- मैं भारत का हूं । ६- इसको पुस्तक दो । ७- इसका घर कहाँ है ? ८- इससे पुस्तक लो । ९- हम दोनों संस्कृत को पढ़ना चाहते हैं । १०- तुम धर्म को जानते हो या नहीं ?

समास- नीचे के तीन शब्दों में विग्रह करके समास बताओ-

सुकाम-सुभद्रौ, चीन-निकायौ, यथा-योग्यम् ।

संस्कृत में प्रश्नोत्तर दो- १- त्वं कुत्रत्यः ? २- अयं कः ? ३- त्वं कां कां भाषां जानासि ? ४- अस्य गृहं कुत्र अस्ति ? ५- त्वया शाकं च ओदनं च भुक्तं न वा ?

६. सभा-प्रकरणम्

इदानीं सभायाङ्किंचिच्चर्चा विधेया ।	अब सभा में कुछ चर्चा करनी चाहिए ।
धर्मः किंलक्षणोऽस्ति ? इति पृच्छामि ।	धर्म का क्या लक्षण है ? यह पूछता हूं ।
वेद-प्रतिपाद्यो न्याय्यः पक्षपात-रहितो यश्च परोपकार-सत्याचरण-लक्षणः ।	वेदोक्त, न्यायानुकूल, पक्षपात-रहित और जो परोपकार-सत्याचरण लक्षणवाला है ।
ईश्वरः कोऽस्तीति ब्रूहि ? ।	ईश्वर कौन है ? यह कहिए ।
यः सच्चिदानन्दस्वरूपः सत्य-गुण-कर्म-स्वभावः ।	जोसच्चिदानन्द-स्वरूप, जिसके गुण-कर्म स्वभाव सत्य हैं ।
मनुष्यैः परस्परङ्कथं वर्तितव्यम् ?	मनुष्यों को आपस में कैसे वर्तना चाहिए ?
धर्म-सुशीलता-परोपकारैः सह यथायोग्यम् ।	धर्म, श्रेष्ठ स्वभाव और परोपकार के साथ जैसा जिस के योग्य हो ।

शब्द-सूची- पूर्व के १६१ मे नये ११ जोड़ने से अब तक इय संस्कृत शब्द १७२ हुए ।

१२ वाँ शब्द-रूप— आकारान्त स्त्रीलिङ्ग लता शब्द

इसीके समान बालिका- सुता-सभा-तुला आदि सभी आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप चलेंगे ।

विभक्ति प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन रूप	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
१	आ	ए	आः	लता	लते	लताः	लता, लता ने
२	आम्	ए	,,	लताम्	,,	,,	लता को
३	या	भ्याम्	भिः	लतया	लताभ्याम्	लताभिः	लता से, द्वारा
४	यै	,,	भ्यः	लतायै	;;	लताभ्यः	लता के लिए
५	याः	;;	;;	लतायाः	;,	;;	लता से
६	;,	योः	नाम्	;;	लतयोः	लतानाम्	लता का, के, की
७	याम्	;;	सु	लतायाम्	;;	लतासु	लता में, पर
सम्बोधन	ए	ए	आः	हे लते	हे लते	हे लताः	हे अरे ओ लता

ऐसे ही शय्या-खट्वा-रोटिका-गीवा-नासिका-धारा-आज्ञा-तुला-वेला-माला-अजा-चटका-कक्षा शाला-कृपा-इच्छा-चर्चा-सुशीलता-क्रिया-विद्या-उपासना-रमा के रूप बोलो लिख कर चलाओ

व्यंजन-सन्धि— ८ वाँ सूत्र 'स्तोः श्चुना श्चुः'।

नियम – स्तु (स-तवर्ग त-थ-द-ध-न) के स्थान में क्रम से श्चु (श-चवर्ग च-छ-ज-झ-ञ) हो जायँ यदि श्चु आगे हो। भाव यह है कि तालव्य से मिलकर दन्त्य अक्षर तालव्य हो जाता है।

जैसे कश्चित्-चर्चा कश्चिच्चर्चा। अन्यत्-च अन्यच्च। मत्-च मच्च। (त को च); यस्-च यश्च। (स को श), यावत्-जीर्यते यावज्जीर्यते। (त को ज हुआ) शरीरात्-श्रमः शरीराच्छ्रमः। तत्-श्रुत्वा तच्छ्रुत्वा। (त को च और श को छ हुआ।

९ वाँ सूत्र— 'शस् छोऽटि' अट् [स्वर-ह-य-व-र] परे रहते श् को छ् हो जाये।

सन्धि-विच्छेद- किलक्षणः-अस्ति-इति किलक्षणोऽस्तीति। कः-अस्ति-इति कोऽस्तीति॥

चौथा समास – तत्पुरुष [जिसमें दोनों पद प्रधान हों]

पहले शब्द का जिस विभक्ति का लोप हो उसी के नाम से वह तत्पुरुष कहा जाता है जैसे—

द्वितीया-तत्पुरुष— कष्ट (कष्ट को)-प्राप्तः कष्टप्राप्तः।
तृतीया ;; पक्षपातेन रहितः पक्षपात-रहितः।
चतुर्थी ,, पाकाय शाला पाक-शाला।
पंचमी ,, पापाद् भयम् पाप-भयम्।
षष्ठी ,, परेषाम् उपकारः परोपकारः। राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः। यही अधिक होता है।
सप्तमी ,, वेदे प्रतिपाद्यः वेद-प्रतिपाद्यः।

अनुवाद

नियम- सह के साथ तृतीया प्रयुक्त होती है जैसे- मया त्वया तेन केन भवता रामेण बालिकया सर्वैः मित्रैः सह। के देखकर षष्ठी का प्रयोग न करें।

१- मैं सभा में उनके साथ जाता हूं। २- धर्म का क्या लक्षण है? ३- जो पक्षपात से रहित और वेद में वर्णित हो वह धर्म है। ४- मैं रोटी को शाक और दाल के साथ खाता हूं। ५- हम सब विद्यालय में संस्कृत के साथ हिन्दी को पढ़ते हैं। ६- हम दोनों तेरे, उनके और आपके साथ वहाँ कभी न जायँगे।

संस्कृत-वाक्य-प्रबोधः

७. आर्यावर्त्त चक्रवर्त्ति-राज प्रकरणम् ।

अस्मिन्नार्यावर्त्ते पुरा के के चक्रवर्त्ति-राजा अभूवन् ?	इस आर्यावर्त्त देश में पहिले कौन कौन चक्रवर्ती राजा हुए हैं ?
स्वायम्भुवाद्या युधिष्ठिर पर्यन्ताः ।	स्वायंभुव से लेकर युधिष्ठिर पर्यन्त ।
चक्रवर्ति शब्दस्य कः पदार्थः ?	चक्रवर्ती शब्द का क्या अर्थ है ?
ये एकस्मिन् भूगोले स्वकीयाम् आज्ञां प्रवर्त्तयितुं समर्थाः ।	जो एक भूगोल भर में अपनी आज्ञा को चलाने में समर्थ हों ।
ते कीदृशीमाज्ञां प्राचीचरन् ?	वे कैसी आज्ञा का प्रचार करते थे ?
यया धार्मिकाणां पालनं दुष्टानां च ताडनं भवेत् ।	जिससे धर्मियों का पालन और दुष्टों का ताड़न होवे ।

८. राज-प्रजा-लक्षण-राजनीत्यनीति-प्रकरणम् ॥

राजा को भवितुं शक्नोति ?	राजा कौन हो सकता है ?
यो धार्मिकाणां सभाया अधिपतित्वे योग्यो भवेत् ।	जो धार्मिकों की सभा के सभापति होने योग्य होवे ।
यः प्रजां पीडयित्वा स्वार्थं साधयेत् स राजा भवितुमर्होऽस्ति न वा ?	जो प्रजा को दुःख देकर स्वार्थ साधे वह राजा हो सकता है वा नहीं ?
नहि, नहि, नहि, स तु दस्युः खलु ।	नहीं, नहीं, नहीं, वह तो डाकू है ।
या राजद्रोहिणी सा तु न प्रजा । किन्तु स्तेन-तुल्या मन्तव्या ।	जो राजा का विरोध करे वह प्रजा नहीं किन्तु चोर के समान माननी चाहिए ।
कथंभूताः जनाः प्रजा भवितुमर्हाः ?	कैसे मनुष्य प्रजा होने को योग्य हैं ?
ये धार्मिकाः सततं राज-प्रिय-कारिणश्च ।	जो धर्मात्मा और निरन्तर राजप्रियकारी हों
राज-पुरुषैरप्येवमेव प्रजा-प्रियकारिभिः सदा भवितव्यम् ।	राजसम्बन्धी पुरुषों को भी ऐसे ही प्रजा का प्रियकारी सदा होना चाहिए ।

शब्द-सूची— पहले के १७२ में नये १५ जोड़कर अब तक सब संस्कृत शब्द १८७ हुए ।

१३-१४ वां शब्द-रूप यत् और किम्

इनका नपुंसक लिंग में १-२ विभक्तियों में किम् के कानि, यत् के यानि रूप होंगे, शेष विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के समान होंगे । पुल्लिङ्ग किम् और यत् के रूप दिये जाते हैं—

विभक्ति	एक वचन	द्विवचन	बहु वचन	स्त्रीलिङ्ग एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
१	यः	यौ	ये	या	ये	याः	जो, जिन ने
२	यम्	यौ	यान्	याम्	ये	याः	जिस को
३	येन	याभ्याम्	यैः	यया	याभ्याम्	याभिः	जिस से; के द्वारा
४	यस्मै	,,	येभ्यः	यस्यै	,,	याभ्यः	जिस को, के लिए
५	यस्मात्	,,	,,	यस्याः	,,	,,	जिस से
६	यस्य	ययोः	येषाम्	,,	ययोः	यासाम्	जिस का, के, की
७	यस्मिन्	,,	येषु	यस्याम्	,,	यासु	जिस में, पर

सम्बोधन नहीं होता।

इसी प्रकार किम् के रूप (य के स्थान पर क करके) बनाओ।

१५-१६. नकारान्त पुल्लिंग राजन् और भगवान् शब्द

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
१	राजा	राजानौ	राजानः	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
२	राजानम्	राजानौ	राज्ञः	भगवन्तम्	,,	भगवतः
३	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
४	राज्ञे	,,	राजभ्यः	भगवते	,,	भगवद्भ्यः
५	राज्ञः	,,	,,	भगवतः	,,	,,
६	,,	राज्ञोः	राजानाम्	,,	भगवतोः	भगवताम्
७	राजनि, राज्ञि	,,	राजसु	भगवति	,,	भगवत्सु
सम्बोधन	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः	हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः

इसी प्रकार आत्मन्, युवन् आदि के रूप चलेंगे।

९ वां क्रिया-रूप— भू धातु के भूतकाल में लुङ् लकार के रूप

आरम्भ में अ लगेगा और धातु के अन्त में प्रत्यय, उन्हें ध्यान से देखो—

पुरुष	प्रत्यय एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	रूप एकवचन	द्वि वचन	बहु वचन	
प्रथम (थर्ड परसन)	त्	ताम्	अन्	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्	वह हुआ
मध्यम (सेकण्ड)	:	तम्	त	अभूः	अभूतम्	अभूत	तू हुआ
उत्तम (फर्स्ट)	अम्	व	म	अभूवम्	अभूव	अभूम	मैं हुआ

५ वां समास कर्मधारय (विशेषणं विशेष्येण बहुलम्)

जैसे महापुरुष–परमात्मा–परमेश्वर–महाराज–चक्रवर्तिराज–कृष्णसर्प–पीताम्बर (पीला कपड़ा)। राजा के साथ समास होने पर राजन् को राज हो जाता है जैसे महाराजः।

अनुवाद– १.पहले भारत में कौन कौन पण्डित हुए। २ विद्वान् वही हो सकता है जो सदाचारी हो। ३जो प्रजा को पीडित करता है वह राजा होने के योग्य नहीं है।

रचना, रिक्त स्थान भरो– १– कः विद्वान् भवितु ? २– राजा कः शक्नोति ? ३– पण्डितः भवितुं । ४– आर्यावर्त्ते कीदृशा अभवन् ?

संस्कृत-वाक्य-प्रबोधः

९. शत्रु-वश-करण प्रकरणम्

एते शत्रुभिः सह कथं वर्तेरन् ?	ये शत्रुओं के साथ कैसे वर्तें ?
राज-प्रजोत्तम-पुरुषैः अरयः साम-दाम-दण्ड-भेदैर्वशमानेयाः ।	राजा और प्रजा के श्रेष्ठ पुरुषों के द्वारा शत्रु साम दाम दण्ड भेद से वश में लाने चाहिए।
सदा स्वराज्य-प्रजा-सेना-कोष-धर्म-विद्या-सुशिक्षाः वर्द्धनीयाः।	सब दिन अपना राज्य, प्रजा, सेना, कोष, धर्म, विद्या और श्रेष्ठ शिक्षा बढ़ानी चाहिए।
यथाधर्माविद्या दुष्टशिक्षा दस्यु चौरादयो न वर्द्धेरन् तथा सततमनुष्ठेयम् ।	जिस प्रकार अधर्म; अविद्या, बुरी शिक्षा, डाकू, चोर आदि न बढ़ें ऐसा निरन्तर करना चाहिए।
धार्मिकैः सह कदापि न योद्धव्यम् ।	धर्मात्माओं के साथ कभी न लड़ना चाहिए ।
निर्जिता अपि दुष्टा विनयेन सत्कर्तव्याः ।	जीते हुए भी दुष्ट विनय से सत्कार-योग्य हैं।
राजप्रजाजनाः प्राणवत् परस्परं सम्पोष्य सुखिनो भवन्तु ।	राजा और प्रजा प्राण के तुल्य एक दूसरे की पुष्टि करके सुखी रहें ।
कर्षिते क्षयरोगवदुभे विनश्यतः ।	निर्बल करने से क्षयरोगवत् दोनों नष्ट होते हैं।
सदा ब्रह्मचर्येण विद्यया च शरीरात्म-बलं वर्धनीयम् ।	सदा ब्रह्मचर्य से और विद्या से शरीर-आत्मा का बल बढ़ाना चाहिए ।
यथादेशकालं पुरुषार्थेन यथावत् कर्माणि कृत्वा सर्वथा सुखयितव्यम् ।	देश-काल के अनुसार उद्यम से ठीक ठीक कर्म करके सब प्रकार सुखी रहना चाहिए ।

१०. वैश्य-व्यवहार-प्रकरणम् ।

वैश्याः कथं वर्तेरन् ?	बनिये लोग कैसे वर्तें ?
सर्वां देशभाषा लेखा-व्यवहारं च विज्ञाय पशुपालन क्रय विक्रयादि व्यापार कुसीद-वृद्धि कृषिकर्माणि धर्मेण कुर्वन्तः ।	सब देश-भाषा और हिसाब को जान कर पशुओंकी रक्षा लेनदेन आदि व्यापार ब्याज-वृद्धि और खेती कर्म धर्म से करते हुए ।

शब्द-सूची — पहले के १८७ में नये ९ जोड़ने से अब तक सब संस्कृत शब्द १९६ हुए।

१७-१८. उकारान्त पुल्लिंग पशु और इकारान्त स्त्रीलिंग मति शब्द

पशु के समान भानु-शत्रु-रिपु-वायु-शिशु-दस्यु-गुरु-तरु-साधु आदि के रूप बोलो-लिखो। मति के समान रुचि-बुद्धि-मणि-गति-कटि-कृति-कृषि-हानि-श्रुति-स्मृति-उक्ति-युक्ति-मुक्ति-भक्ति-शान्ति-भूमि-समृद्धि-अंगुलि आदि के रूप चलेंगे, जिन्हें बोल और लिखकर याद करो।

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन	स्त्रीलिङ्ग एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
१	पशुः	पशू	पशवः	मतिः	मती	मतयः	मति, ने
२	पशुम्	,,	पशून्	मतिम्	,,	मतीः	को
३	पशुना	पशुभ्याम्	पशुभिः	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	से ; के द्वारा
४	पशवे	,,	पशुभ्यः	मत्यै	,,	मतिभ्यः	के लिए
५	पशोः	,,	,,	मत्याः	,,	,,	से
६	,,	पश्वोः	पशूनाम्	,,	मत्योः	मतीनाम्	का, के, की
७	पशौ	,,	पशुषु	मत्याम्	,,	मतिषु	में, पर
सम्बोधन	हे पशो	हे पशू	हे पशवः	हे मते	हे मती	हे मतयः	

इसी तरह भानु के रूप (पशु के स्थान पर भानु कर के) बनाओ।

पठन् और यावान् के रूप

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
१	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः	यावान्	यावन्तौ	यावन्तः
२	पठन्तम्	,,	पठतः	यावन्तम्	,,	यावतः
३	पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भिः	यावता	यावद्भ्याम्	यावद्भिः
४	पठते	,,	पठद्भ्यः	यावते	,,	यावद्भ्यः
५	पठतः	,,	,,	यावतः	,,	,,
६	,,	पठतोः	पठताम्	,,	यावतोः	यावताम्
७	पठति	,,	पठत्सु	यावति	,,	यावत्सु
सम्बोधन	हे पठन्	हे पठन्तौ	हे पठन्तः	हे यावन्	हे यावन्तौ	हे यावन्तः

इसी तरह कुर्वन्, चलन्-लिखन्-हसन्-खादन्-पिबन्-वदन् आदि के रूप चलेंगे।

यह शतृ (= अत् = अन्) प्रत्यय वर्तमान-कालिक कृदन्त (प्रेजेंट पार्टिसिपिल है। अंग्रेजी में अन् के स्थान पर इंग लगता है जैसे गोइंग ।

यावान् के समान तावान् -कियान् आदि के रूप बोल-लिखकर याद करो।

१०. धातु-रूप, आत्मनेपदी वर्त का विधि लिङ् [चाहिए]

प्रत्यय एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	रूप एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
एत	एयाताम्	एरन्	वर्त्तेत	वर्त्तेयाताम्	वर्त्तेरन्
एथाः	एयाथाम्	एध्वम्	वर्त्तेथाः	वर्त्तेयाथाम्	वर्त्तेध्वम्
एय	एवहि	एमहि	वर्त्तेय	वर्त्तेवहि	वर्त्तेमहि

अनुवाद रचना और अभ्यास

इसी तरह एध-वन्द-विद-याच-वर्ध-जाय-मन्य-लभ-सेव-सह के रूप बनाओ।

१- मैं गुरु-सेवा करूं। २- छात्र कैसा व्यवहार करें ? ३- वे उसकी सेवा करें। ४- तुम्हें नहीं माँगना चाहिए। ५- हम ईश्वर के लिए वन्दना करें। ६- संसार में आर्य बढ़ें।

११. कुसीद-ग्रहण-प्रकरणम्

यद्येकवारं दद्याद् गृह्णीयाच्च तर्हि कुसीद-वृद्धया द्वैगुण्ये धर्मोऽधिकेऽधर्म इति वेदितव्यम् । यदि एक वार दे और ले तो ब्याज-वृद्धि से द्विगुण तक लेने में धर्म, अधिक में अधर्म है। ऐसा जानना चाहिए।

प्रतिमासं प्रतिवर्षं वा यदि कुसीदं गृह्णीयात् यदा समूलं द्विगुणं धनमागच्छेत्तदा मूलमपि त्याज्यम् । प्रति मास या प्रति वर्ष यदि ब्याज ले तो जब मूल-सहित दूना धन आ जाय तो मूल भी छोड़ देना चाहिए ।

शतं मुद्राः देहि । सौ रुपये दीजिए ।

ददामि, परन्तु कियत्कुसीदं दास्यसि ? देता हूं, किन्तु कितना ब्याज देगा ?

प्रतिमासं मुद्रार्द्धम् । प्रति महीने आधा रुपया ।

१२. उत्तमर्णाधमर्ण प्रकरणम्

भो अधमर्ण ! यावद् त्वया पूर्वं गृहीतं तदिदानीं देहि । हे ऋणिया ! जितना धन तूने पहले लिया था वह अब दे ।

मम साम्प्रतं तु दातुं सामर्थ्यं नास्ति । मेरा अभी तो देने का सामर्थ्य नहीं है।

कदा दास्यसि ? कब देगा ?

मास-द्वयानन्तरम् । दो महीने के पीछे ।

यद्येतावति समये न दास्यति तर्हि राज-नियमान्निग्रहीष्यामि । यदि इतने समय में न देगा तो राज-प्रबन्ध से पकड़ा कर लूंगा ।

यद्येवङ्कुर्याम् तर्हि तथैव गृहीतव्यम् । यदि ऐसा करूं तो वैसे ही लेना ।

१३. नौका-विमानादि-चालन-प्रकरणम्

त्वं नौकाश् चालयसि न वा ? तू नावों को चलाता है वा नहीं ?

चालयामि । चलाता हूं ।

नदीषु समुद्रेषु वा ? नदियों में अथवा समुद्रों में ?

उभयत्र चालयामि । दोनों में चलाता हूं ।

कस्यां दिशि कस्मिन् देशे च गच्छन्ति ? किस दिशा और किस देश में जाती हैं ?

सर्वासु दिक्षु पाताल-देश-पर्यन्तम् । सब दिशाओं में, पाताल-देश-पर्यन्त ।

ताः कीदृश्यः सन्ति, केन चलन्ति ? वे नौका कैसी हैं, किससे चलती हैं ?

कैवर्त्त-वाय्वग्नि-जल-कला-वाष्पादिभिः । मल्लाह-वायु-अग्नि-जल-कला-भापादि से ।

याः पुरुषाश्चालयन्ति ताः ह्रस्वाः, या जिनको मनुष्य चलाते हैं वे छोटी, जो

महत्यस् ताः वाय्वादिभिश् चाल्यन्ते, बड़ी होती हैं वे वायु आदि से चलाई जाती हैं,
ताश्चाश्वतरी-श्यामकर्णाश्वाख्याः सन्ति और वे अश्वतरी-श्यामकर्णाश्व नामक हैं।
विमानादिभिरपि सर्वत्र गच्छामश्च। और विमान आदि से भी सर्वत्र जाते हैं।

शब्द-सूची— ४ नये जोड़कर सब २०० हुए।

धातु-रूप ११. दा (दद्) का परस्मैपदी विधि लिङ् लकार [चाहिए]

पुरुष	एकवचन रूप	(प्रत्यय)	द्विवचन रूप	(प्रत्यय)	बहुवचन रूप	(प्रत्यय)
प्रथम	दद्यात्	(यात्)	दद्याताम्	(याताम्)	दद्युः	(युः)
मध्यम	दद्याः	(याः)	दद्यातम्	(यातम्)	दद्यात	(यात)
उत्तम	दद्याम्	(याम्)	दद्याव	(याव)	दद्याम	(याम)

इसी प्रकार आप्नु, शक्नु, ज्ञा [जानी], श्रु [शृणु], कृ [कुर्], ग्रह् [गृह्णी] के रूप चलाओ।

प्रत्यय— ९. ण्यत् [य] 'ऋहलोर्ण्यत्'

ऋकारान्त और हलन्त धातु से 'चाहिए' और 'योग्य' अर्थ में ण्यत् (य) होता है जैसे कृ से कार्य, ऐसे ही पाठ्य-खाद्य-भोज्य-पूज्य-ग्राह्य आदि। शब्द बनते हैं

११ अनुवाद तथा रचना का अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो और अनुवाद करो—

१— उसे क्या करना चाहिए? [वह क्या करे?] २— तुम्हें क्या पाना चाहिए? ३— मुझे क्या सुनना चाहिए? ४- तुझे क्या खरीदना चाहिए? ५— मुझे क्या देना चाहिए?

२०. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नदी शब्द के रूप

विभक्ति	प्रत्यय एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	रूप एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
१	ई	यौ	यः	नदी	नद्यौ	नद्यः	ने
२	ईं	यौ	ईः	नदीं	नद्यौ	नदीः	को
३	यां	भ्याम्	भिः	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभीः	से, के द्वारा
४	यै	,,	भ्यः	नद्यै	,,	नदीभ्यः	के लिए
५	याः	,,	;;	नद्याः	;;	,,	से
६	,,	योः	नाम्	,,	नद्योः	नदीनाम्	का, के, की
७	याम्	,,	षु	नद्याम्	,,	नदीषु	में, पर
सम्बोधन	इ	यौ	यः	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः	अरे, ओ

इसी प्रकार मही-रजनी-दासी-पुरी-वाणी-ब्राह्मणी सरस्वती-बुद्धिमती-मृगी-सिंही-राज्ञी-सर्पिणी-भवती-श्रीमती-कौमुदी-इन्द्राणी-कोटरी-कस्तूरी-आढकी-महिषी आदि के रूप चलाओ।

१३. क्रय-विक्रय-प्रकरणम्

अस्य किम् मूल्यम् ?	इस का क्या मूल्य है ?
पञ्च रूप्याणि ।	पाँच रुपये ।
गृहाणेदं वस्त्रं देहि ।	लीजिए । यह वस्त्र दीजिए ।
अद्य श्वो घृतस्य कोऽर्घः ?	आज-कल घी का क्या भाव है ?
मुद्रंकया सपादप्रस्थं विक्रीणते ।	एक रुपया का सवा सेर बेचते हैं ।
गुडस्य को भावः ?	गुड़ का क्या भाव है ?
अष्टभिः पणैरेकसेटकमात्रं ददति ।	दो आने का एक सेर भर देते हैं।

त्वमापणङ्गच्छैलामानय। आनीता गृहाण। तू दुकान जा; इलायची लेआ। लाई, ले ले।
कस्य हट्टे दधिदुग्धे अच्छे प्राप्नुतः?धनपालस्य। किसके हट्ट में दही-दूध अच्छे हैं? धन० के।
स सत्येनैव क्रय-विक्रयौ करोति । वह सत्य से ही क्रय-विक्रय करता है।
श्रीपतिर्वणिक्कीदृशोऽस्ति?स मिथ्याकारी। श्रीपति बनिया कैसा है ? वह झूठा है।
अस्मिन्संवत्सरे कियाँल्लाभो व्ययश्च जातः ? इस वर्ष में कितना लाभ और खर्च हुआ ?
पञ्च लक्षाणि लाभो लक्षद्वयस्य व्ययश्च। पाँच लाखका लाभ और दो लाख का व्यय।
मम खल्वस्मिन्वर्षे लक्षत्रयस्य हानिर्जाता। मेरे तो इस वर्ष में ३ लाख की हानि होगई।
कस्तूरी कस्मादानीयते? नयपालात् । कस्तूरी कहां से लाई जाती है? नयपाल से
बहुमूल्यमाविकंकुत आनयन्ति? कश्मीरात् ।कीमती दुशाला कहाँ से लाते हैं? कश्मीर से

२१ दिक् शब्द स्त्रीलिङ्ग

२२ स्त्रीलिङ्ग तत् (सा) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	रूप	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	दिक्	दिशौ	दिशः		सा	ते	ताः
२	दिशम्	,,	,,		ताम्	ते	ताः
३	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः		तया	ताभ्याम्	ताभिः
४	दिशे	,,	दिग्भ्यः		तस्यै	,,	ताभ्यः
५	दिशः	,,	,,		तस्याः	,,	,,
६	,,	दिशोः	दिशाम्		,,	तयोः	तासाम्
७	दिशि	,,	दिक्षु		तस्याम्	,,	तासु
सम्बोधन	हे दिक्	हे दिशौ	हे दिशः				

धातुरूप १२ दा-देना और १३ आप् (आप्नु-पाना) वर्तमान लट् लकार ।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	ददाति	दत्तः	ददति	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम	ददासि	दत्थः	दत्थ	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम	ददामि	दद्वः	दद्मः	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

१४ क्री [खरीदना] परस्मैपद लट् लकार और आत्मनेपद के रूप

पुरुष	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन	एक वचन	दिव चनन	बहु बचन
प्रथम	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
मध्यम	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणध्वे
उत्तम	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	क्रीणे	क्रीणावहे	क्रीणामहे

आप्नो० में पहले प्र लगाने से प्राप्नो०, और क्रीणा० में वि लगाने से विक्रीणा० बन जायगा।

१४, २५. गमनागमन प्रकरणम्

कुत्र गच्छसि ? पाटलिपुत्रकम् ।	तू कहाँ जाता है ? पटना को ।
कदागमिष्यसि ? एकमासे ।	कब आयेगा ? एक महीने में ।
स क्व गतः ? शाकमानेतुम् ।	वह कहाँ गया ? शाक लेने को ।

अयं रक्तोष्णीषः क्व गच्छति? स्वगृहम् । यह लाल पगड़ी वाला कहाँ जाता है?अपने घर ।
अस्य कदा जन्माभूत्? पंच संवत्सरा अतीताः । इसका कब जन्म हुआथा? पाँच वर्ष बीते
परेद्युर्ग्रामो गन्तव्यः । गमिष्यामि । कल गाँव जाना चाहिए । जाऊँगा ।
भवान् परेद्युः क्व गन्ता ? अयोध्याम् । आप कल कहाँ जायेंगे ? अयोध्या को ।
तत्र किं कार्यमस्ति ? वहाँ क्या काम है ?
मित्रैः सह मेलनङ्कर्तव्यमस्ति । मित्रों के साथ मेल कर्तव्य है ।
कदागतोऽसि ? इदानीमेवागच्छामि । तू कब आया ? मैं अभी आता हूं ।

सामान्य भूत काल लुङ् लकार और अनद्यतन भविष्य काल लुट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
मध्यम	अभूः	अभूतम्	अभूत	गन्तासि	गन्तास्थः	गन्तास्थ
उत्तम	अभूवम्	अभूव	अभूम	गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्मः

१५. क्षेत्र-वपन १६. शस्य-छेदन प्रकरणम्

भवन्तः क्षेत्राणि कर्षन्तु ।	आप खेत जोतें ।
बीजान्युप्तानि न वा ? उप्तानि ।	बीज बोये वा नहीं ? बो दिये ।
अस्मिन् क्षेत्रे किमुप्तम् ? व्रीहयः ।	इस खेत में क्या बोया है ? धान -
अस्मिन् ? गोधूमाः ।	इस में ? गेहूं ।
अस्मिन् किं वपन्ति ? तिलमुद्गमाषाढकीः ।	इसमें क्या बोते हैं ? तिल, मूँग; उड़द, अरहर
एतस्मिन् किमुप्यते ? यवाः ।	इसमें क्या बोया जाता है ? जौ
सम्प्रति केदाराः पक्वाः ।	इस समय खेत पक गये हैं ।
यदि पक्वाः स्युस्तर्हि लुनन्तु ।	यदि पक गये हों तो [आप] काटें ।
इदानीं कृषीवला अन्योन्य-केदारान् व्यतिलुनन्ति ।	इस समय किसान एक दूसरे के खेतों को काटते हैं ।
ऐषमः धान्यानि प्रभूतानि जातानि ।	इस साल में अनाज बहुत हुए हैं ।
अत एवैकस्याः मुद्रायाः गोधूमाः खारी-प्रमिताः, अन्यानि तण्डुलादीन्यपि	इसी से एक रुपये के गेहूं एक मन भर और चावल आदि भी
किञ्चिदधिकन्यूनानि मिलन्ति ।	कुछ अधिक वा न्यून मिलते हैं ।

१७. गवादि-दोहन-परिमाण १८. क्रय-विक्रयार्थ प्रकरणम्

इयं गौर्दुग्धं ददाति न वा ? ददाति ।	यह गौ दूध देती है वा नहीं ? देती है ।
इयं महिषी कियद्दुग्धं ददाति? दशप्रस्थाः	यह भैंस कितना दूध देती ? दस सेर ।
तवाजावयः सन्ति न वा ? सन्ति ।	तेरे बकरी भेड़ है वा नहीं ? हैं ।
प्रतिदिनं ते कियद्दुग्धं जायते? पंच खार्यः।	प्रतिदिन तेरे कितना दूध होता है? पाँच मन ।
नित्यं किं परिमाण घृत-नवनीते भवतः ?	नित्य कितना घी-मक्खन होता है ?
सार्धद्विदशप्रस्थे ।	साढ़े बारह सेर ।
प्रत्यहं कियद् भुज्यते कियच्च विक्रीयते?	प्रतिदिन कितना खाया जाता और कितना बिकता?
सार्धद्विप्रस्थं भुज्यते दशप्रस्थं च विक्रीयते ।	ढाईसेर खाया जाता और दस सेर बिकता है ।
एतद्रूप्यकेन कियन् मिलति? त्रित्रिप्रस्थम् ।	यह एक रुपये का कितना मिलता है? ३-३ सेर ।
तैलस्य कियत् मूल्यम् ?	तैल का क्या मूल्य है ?
मुद्रापादेन सेटकद्वयं प्राप्यते ।	चार आने का दो सेर मिलता है।
अस्मिन्नगरे कति हट्टास्सन्ति ? पंचसहस्राणि ।	इस नगर में कितनी दुकानें हैं ? ५ हजार ।

२१. राजा-प्रजा-सम्बन्ध २२. साक्षी प्रकरणम्

भो राजन् ! ममायमृणं न ददाति ।	हे राजन् ! मेरा यह ऋण नहीं देता ।
यदा तेन गृहीतं तदानीन्तनः कश्चित्	जब उसने लिया था उस समय का कोई
साक्षी वर्त्तते न वा ? अस्ति ।	साक्षी वर्त्तमान है वा नहीं ? है।
तर्ह्यानय । आनीतोऽयमस्ति ।	तो लाओ । लाया; यह है ।
भोः साक्षिस्त्वमत्र किंचित् जानासि	हे साक्षी ! तू इस विषय में कुछ जानता है
न वा ? जानामि ।	वा नहीं ? जानता हूं ।
यादृशं जानासि तादृश सत्यं वद ।	जैसा जानता है वैसा सच कह ।
सत्यं वदामि, अस्मादनेन मत्समक्षे	सत्य कहता हूं इससे इ ने मेरे सामने
सहस्रं मुद्रा गृहीताः ।	सहस्र रुपये लिये थे ।
भो भृत्य ! तं शीघ्रमानय । आनयामि ।	ओ नौकर ! उसको जल्दी ले आ । लाता हूं ।
गच्छ, राजसभायां राज्ञा त्वमाहूतो सि ।	जा, राजसभा में राजा ने तुझ को बुलाया है।
चलामि । भो राजन्नुपस्थितः सः ।	चलता हूं । हे राजन् ! वह उपस्थित है ।
त्वयास्यर्णं कुतो नादायि ?	तूने इसका ऋण क्यों नहीं दिया ?
अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यं नास्ति	इस समय तो मेरा सामर्थ्य नहीं है
षण्मासानन्तरं दास्यामि ।	छः महीने के पीछे दूँगा ।
पुनर्विलम्बं तु न करिष्यसि ?	फिर देर तो न करेगा ?
महाराज ! कदापि न करिष्यामि ।	महाराज ! कभी न करूँगा ।
अच्छ, गच्छ धनपाल ! यदि सप्तमे मास्ययं	अच्छा जाओ धनपाल ! यदि सातवें महीने य
न दास्यति तर्ह्येनं निगृह्य दापयिष्यामि ।	न देगा तो इसको पकड़ के दिला दूँगा।
अयं मम शतं मुद्रा गृहीत्वाधुना न ददाति।	यह मेरे सौ रुपये लेकर अब नहीं देता ।
किंच भो, यदयं वदति तत् सत्यं न वा ?	क्यों जी, जो यह कहता है वह सच है वा नहीं ?
मिथ्यैवास्ति । अहन्तु जानाम्यपि न	झूठ ही है । मैं तो जानता भी नहीं कि
यदस्य मुद्राः मया कदा स्वीकृताः ।	इसके रुपये मैंने कब लिए थे ।
उभयोस् साक्षिणः सन्ति न वा ? सन्ति ।	दोनों के साक्षी लोग है वा नहीं ? हैं।
कुत्र वर्त्तन्ते ? इमे उत्तिष्ठन्ते ।	कहाँ वर्त्तमान हैं ? ये खड़े हैं ।
अनेन युष्माकं समक्षे शतं मुद्राः दत्ता न वा ?	इसने तुम्हारे सामने सौ रुपये दिये वा नहीं ?
दत्तास्तु खलु ।	निश्चित दिये तो हैं ।

अनेन शतं मुद्राःगृहीताःन वा? वयं न जानीमः। इसने सौ रुपये लिये या नहीं?हम नहीं जानते।
प्राड्विवाकेनोक्तम् -- अयमस्य साक्षिणश्च सर्वे मिथ्यावादिनः सन्ति । वकील ने कहा — यह और इसके साक्षी सब झूट बोलने वाले हैं ।
कुत इदनेतेषां परस्परं विरुद्धवचोऽस्ति । क्योंकि यह इनका परस्पर विरुद्ध वचन है।
यतस् त्वया मिथ्यालपितम् अत एव तवैकसंवत्सरपर्यन्तंकारागृहे बन्धः क्रियते। क्योंकि तूने झूट बोला, इसी कारण तेरा १वर्ष तक बन्दीगृहमें बन्ध किया जाता है।
अयमुत्तमर्णस्त्वदीयान् पदार्थान् गृहीत्वा विक्रीय वा स्वर्णं ग्रहीष्यति । यह सेठ तेरे पदार्थो को लेकर वा बेच कर अपने ऋण को ले लेगा ।
अयं मदीयानि पञ्च शतानि रूप्याणि स्वीकृत्य न ददाति। कुतो न ददासि? यह मेरे पाँच सौ रुपये लेकर नहीं देता। तू क्यों नहीं देता?
मया नैव गृहीताः । कथं दद्याम् ? मैंने लिये ही नहीं । कैसे दूँ ?
अयं मम लेखोऽस्ति । पश्य तम् । यह मेरा लेख है। देख इसको।
आनयःगृह्यताम्।अयं लेखो मिथ्या प्रतिभाति। ला। लो। यह लेख झूट मालूम पड़ता है।
तस्मात्त्वं षण्मासान् कारागृहे वस । इससे तू ६ महीने बन्दीघर में रह।
तवेमे साक्षिणश्च द्वौ द्वौ मासौ तत्रैव वसेयुः। और तेरे ये साक्षी दो दो महीने वहीं रहें ।

२३ सेव्य-सेवक-प्रकरणम्

भो मङ्गलदास,सेवार्थं कैङ्कर्यं करिष्यसि ? हे मङ्गलदास, सेवा के लिए नौकरी करेगा?
करिष्यामि । करूँगा ।
किं प्रतिमासं मासिकं ग्रहीतुमिच्छसि ? कितना वेतन प्रतिमास लिया चाहता है?
पञ्च रूप्याणि । ५ रुपये।
मयैतावद्दास्यते चेद्यथायोग्या परिचर्या विधेया। मैं इतना दूँगा यदि ठीक सेवा की जाये।
यदाहं भवन्तं सेविष्ये तदा भवानपि प्रसन्न एव भविष्यति । जब मैं आपकी सेवा करूंगा तब आप भी प्रसन्न ही होंगे ।
दन्तधावनमानय। स्नानार्थं जलमानय। दातुन ले आ । नहाने के लिए जल ला।
उत्तरीयं वस्त्रं देहि। आसनं स्थापय। पाकङ्कुरु। अंगोछा दे। आसन रख। रसोई कर।
हे सूद ! त्वयान्नं व्यञ्जनं च सुष्ठु सम्पादनीयम् हे रसोइये ! तुझे अन्न और शाक आदि उत्तम बनाना चाहिए ।
अद्य किं किं कुर्याम् ? आज क्या क्या करूँ ?

पायस मोदकौदन सूप रोटिका शाकानि उपव्यञ्जनादीनि च ।	खीर; लड्डू; चावल, दाल, रोटी, शाक, और चटनी आदि भी ।

२४. मिश्रित-प्रकरणम्

नित्यप्रति किं वेतनं दास्यसि ?	नित्यप्रति क्या वेतन दोगे ?
प्रत्यहं द्वादश पणाः ।	प्रतिदिन बारह पैसे ।
वस्त्राणि श्लक्ष्णे पट्टे प्रक्षालनीयानि।	कपड़े चिकनी पटिया पर धोने चाहिए ।
गाः वने चारय ।	गायें वन में चरा ।
पुष्प-वाटिकायाङ्गन्तव्यमस्ति ।	फूलों की बगिया में जाना है ।
आम्रफलानि पक्वानि न वा ?	आम के फल पके हैं वा नहीं ?
पक्वानि सन्ति । उपानहावानय ।	पके हैं । जूते लाओ ।

२६ रोग प्रकरणम्

अस्य कीदृशो रोगो वर्त्तते ?	इसका किस प्रकार का रोग है ?
जीर्णज्वरोऽस्ति । औषधं देहि ।	जीर्ण ज्वर है । औषध दे ।
ददामि, परन्तु पथ्यं सदा कर्तव्यम् । कुतो, नहि पथ्येन विना रोगो निवर्त्तते ।	देता हूं, परन्तु पथ्य सदा करना चाहिए क्योंकि पथ्य के विना रोग निवृत्त नहीं होता।
अयङ्कुपथ्यकारित्वात् सदा रुग्णो वर्त्तते ।	यह कुपथ्यकारी होने से सदा रोगी रहता है।
अस्य पित्त-कोपो वर्त्तते ।	इसको पित्त-कोप है ।
मम कफो वर्धते, औषधं देहि ।	मेरा कफ बढ़ता जाता है, औषध दे ।
निदानङ्कृत्वा दास्यामि ।	रोग की परीक्षा करके दूंगा ।
अस्य महान् कासश्वासोऽस्ति ।	इसको बड़ा कास-श्वास (दमा) है ।
मम शरीरे तु वातव्याधिर्वर्तते ।	मेरे शरीर में तो वात-व्याधि है ।
संग्रहणी निवृत्ता न वा ?	संग्रहणी छूटी वा नहीं ?
अद्यपर्यन्तं तु न निवृत्ता ।	आज तक तो नहीं छूटी ।
औषधं संसेव्य पथ्यङ्करोषि न वा ?	औषधि सेवन करके पथ्य करते हो वा नहीं
क्रियते, परन्तु सुवैद्यो न मिलति कश्चिद् यः सम्यक्परीक्ष्यौषधं दद्यात् ।	किया जाता है, परन्तु कोई अच्छा वैद्य नहीं मिलता जो ठीक परीक्षा कर औषध दे ।
तृषास्ति चेज्जलं पिब ।	यदि प्यास हो तो जल पी ।

२७ मिश्रित प्रकरणम्

इदानीं शीतं निवृत्तमुष्णसमय आगतः ।	अब शीत निवटा, गरमी का समय आया ।
हेमन्ते क्व स्थितः ? वङ्गेषु ।	हेमन्त में कहाँ रहा था ? बङ्गाल में ।

पश्य मेघोन्नतिं कथङ्गर्जति विद्युद् द्योतते च।	देख मेघोन्नति, कैसे गर्जता व बिजली चमकती है।
अद्य महती वृष्टिर्जाता यथा तडागा नद्यश् च पूरिताः।	आज बड़ी वर्षा हुई जिससे तालाब और नदियाँ भर गईं।
शृणु, मयूराः सुशब्दयन्ति।	सुन, मोर अच्छा शब्द करते हैं।
कस्मात् स्थानादागतः? जङ्गलात्।	किस स्थान से आया? जङ्गल से।
तत्र त्वया कदापि सिंहो दृष्टो न वा?	वहाँ तूने कभी शेर देखा या नहीं?
बहुवारं दृष्टः।	बहुत बार देखा।
नदी पूर्णा वर्त्तते; कथमागतः? नौकया।	नदी भरी है. कैसे आया? नाव से।
आरोहत हस्तिनम्, गच्छेम।	चढ़ो हाथी पर; जायें।
अहं तु रथेनागच्छामि।	मैं तो रथ से आता हूं।
अहमश्वोपरि स्थित्वा गच्छेयं शिविकायां वा?	मैं घोड़े पर चढ़के जाऊँ या पालकी पर?
पश्य, शारदं नभः कथं निर्मलं वर्त्तते।	देख, शरद् का आकाश कैसा निर्मल है,
चन्द्र उदितो न वा?	चन्द्रमा उदय हुआ वा नहीं?
इदानीन्तु नोदितः खलु।	इस समय तो नहीं उगा है।
कीदृश्यस् तारकाः प्रकाशन्ते!	किस प्रकार तारे प्रकाशमान हो रहे हैं।
सूर्योदयाच्चलन्नागच्छामि।	सूर्योदय से चलता हुआ आता हूं।
क्वापि भोजनङ्कृतन्न वा? कृतमध्याह्नात् प्राक्। अधुनात्र कर्तव्यम्। करिष्यामि।	कहीं भोजन किया या नहीं? किया, दोपहर से पहले। अब यहाँ करना चाहिए। करूँगा।

२८ विवाह-स्त्री-पुरुषालाप-प्रकरणम्।

त्वया कीदृशो विवाहः कृतः? स्वयंवरः।	तूने कैसा विवाह किया? स्वयंवर।
स्त्र्यनुकूलास्ति न वा? अस्ति।	स्त्री अनुकूल है वा नही? है।
कत्यपत्यानि जातानि सन्ति? ४ पुत्रा द्वे कन्ये च।	कितने सन्तान हुए हैं? ४ पुत्र, २ कन्या।
स्वामिन्नमस्ते, काञ्चित्सेवामनुज्ञापय।	स्वामीजी, नमस्ते, किसी सेवा को आज्ञा करिए,
सर्वथैव सेवसे पुनराज्ञापनस्य कावश्यकतास्ति?	सब प्रकार की सेवा करती ही हो फिर आज्ञा कराने की क्या आवश्यकता है?
अद्य भवाञ्छ्रमङ्कृतवानतः उष्णेन जलेन स्नातव्यम्।	आज आप ने श्रम किया है अतः गरम जल से स्नान करना चाहिए।
गृहाणेदं जलमासनं च।	लीजिए यह जल और आसन।
इदानीं भ्रमणाय गन्तव्यम्।	अब घूमने के लिए जाना चाहिए।
क्व गच्छेव? उद्यानेषु।	कहाँ जायें? उद्यानों में।

सन्धि १२ – ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्

यदि ह्रस्व के पश्चात् ङ-ण-न में से कोई हो और आगे स्वर हो उनके पास एक और ङ-ण-न का आगम हो जाता है जैसे— राजन्-उपस्थितः = राजन्नुपस्थितः, चलन्-आगच्छ = चलन्नागच्छ; अस्मिन्-आर्यावर्त्ते – अस्मिन्नार्यावर्त्ते, प्रत्यङ्-आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा ।

धातु-रूप १६— आत्मनेपदी लभ् का भविष्यत् काल लृट् लकार

पुरुष	एक वचन	अर्थ	द्विवचन	बहु वचन
प्र० पु०	लभिष्यते	वह पायेगा	लभिष्येते	लभिष्यन्ते
म० पु०	लभिष्यसे	तू पायेगा	लभिष्येथे	लभिष्यध्वे
उ० पु०	लभिष्ये	मैं पाऊँगा	लभिष्यावहे	लभिष्यामहे

इसी प्रकार सेव-वर्ध-शी (शय) आदि के रूप चलेंगे। प्रत्यय पहले लट् लकार में बताये गये हैं, लृट में धातु-प्रत्यय के बीच में स्य (इष्य) लगा दिया जाता है।

सन्धि १३— एचोऽयवायावः (एचः अय्-अव्-आय्-आवः) अयादि चतुष्टय

१४— भो भगो अघो अपूर्वस्य यो अशि ।

१५— लोपः शाकल्यस्य

एच् (ए-ओ-ऐ-औ) के स्थान में क्रमशः अय्-अव्-आय्-आव हो जाते हैं यदि स्वर परे हो उदाहरण— चे-अनम् = चयनम्, पो-अनम् = पवनम्; नै-अकः = नायकः; पौ-अकः = पावकः; उपानहौ-आनय = उपानहावानय ।

भोस्-भगोस्-अघोस् तथा अस् के स को रु, रु को य होकर उस य का लोप हो जाता है अश् परे रहते, शाकल्य के मत में, (जिसे पाणिनि ने भी माना)। उदाहरण – भोस्-नमस्ते = भो नमस्ते, भगोस्-आयाहि = भगो आयाहि, अघोस्-याहि = अघो याहि, कस्-आगच्छति = क आगच्छति । वर्धते-औषधम् = वर्धत औषधम् ।

२९— स्त्री-श्वश्रू-श्वसुरादि सेव्य-सेवक प्रकरणम्

हे श्वश्रु ! सेवामाज्ञापय; किङ्कुर्याम् ? हे सास ! सेवा की आज्ञा कीजिए, क्या करूँ ?
सुभगे ! जलं देहि । गृहाणेदमस्ति । सुभगे ! जल दे । लीजिए, यह है ।
हे श्वसुर ! भवान् किमिच्छत्याज्ञापयतु । हे ससुर जी ! क्या इच्छा है, आज्ञा कीजिए ।
हे वशंवदे ! नित्यं सदाचारमाचर । हे वशंवदे ! नित्य सती स्त्रियों का आचरण कर।

३० – ननन्द-भ्रातृजाया-वाद प्रकरणम्

हे ननन्दरिहागच्छ वार्तालापङ्कुर्याव । हे ननन्द, यहाँ आओ बात करें ।
वद भ्रातृजाये, किमिच्छसि ? कहो भौजाई, क्या इच्छा है ?
तव पतिः कीदृशोऽस्ति ? तेरा पति कैसा है ?
अतीव सुखप्रदो यथा तव । अत्यन्त सुख देने वाला है जैसा तेरा
मया त्वीदृशःपतिःसौभाग्येन लब्धोऽस्ति । मैंने तो ऐसा पति सौभाग्य से पाया है ।
कदाचिदप्रियं तु न करोति ? कभी प्रतिकूल तो नहीं करता ?

कदापि नहि; किन्तु सर्वदा प्रीतिं वर्धयति । — कभी नहीं, किन्तु सदा प्रीति बढ़ाता है।

पश्याभ्यां बाल्यावस्थायां विवाहः कृतोऽतः सदा दुःखिनौ वर्त्तेते । — देखो; इन दोनों ने बाल्यावस्था में विवाह किया है अतः सदा दुःखी रहते हैं ।

यान्यपत्यानि जातानि तान्यपि रुग्णान्यग्रेऽपत्यस्याशैव नास्ति निर्बलत्वात् । — जो सन्तान हुए, वे भी रोगी हैं आगे सन्तान की आशा ही नहीं है निर्बलता से ।

पश्य तव मम च कीदृशानि पुष्टान्यपत्यानि द्विवर्षानन्तरं जायन्ते । — देखो, तेरे और मेरे कैसे पुष्ट सन्तान दो वर्ष के पीछे होते जाते हैं ।

सर्वदा प्रसन्नानि सन्ति वर्धन्ते च सुशीलत्वात् । — सदा प्रसन्न हैं और बढ़ते हैं सुशीलता से

नह्यस्मिन् संसारेऽनुकूल स्त्री-पति-जन्य-सुख-सदृशङ्किमपि विद्यते । — इस संसार में अनुकूल स्त्री-पति से होने वाले सुख के सदृश कुछ भी नहीं है ।

इदानीं वृद्धावस्था प्राप्ता, यौवनङ्गतङ्केशाः श्वेता जाताः प्रतिदिनं बलं ह्रसति च । — इस समय वृद्धावस्था आई, जवानी गई, केश सफेद हुए और प्रतिदिन बल घट रहा है।

स इदानीङ्गमनागमनमपि कर्तुमशक्तो जातः । — वह अब गमनागमन करने को भी असमर्थ हो गया ।

बुद्धि-विपर्यासत्वाद् विपरीतं भाषते । — बुद्धि-विपरीत होने से उलटा बोलता है ।

अद्यास्य मरणसमय आगत ऊर्ध्व श्वासत्वात् । — आज इसके मरने का समय आया, ऊपर की श्वास के चलने से ।

सोऽद्य मृतः, नीयतां श्मशानम् । — वह आज मर गया, ले चलो श्मशान को ।

वेदमन्त्रैर्घृतादिभिर्दह्यताम् । — वेद-मन्त्रों से घी आदि से जला दो ।

शरीरं भस्मीभूतं जातमतः तृतीयेऽह्न्यस्थि-संचयनङ्कृत्वा पुनस्तन्निमित्तं शोकादिकङ्किञ्चिदपि नैव कार्यम् । — शरीर भस्म होगया इससे तीसरे दिन अस्थि-संचय करके फिर उसके निमित्त शोकादि कुछ भी न करना चाहिए ।

त्वं मातृपित्रोः सेवां न करोष्यतः कृतघ्नो वर्त्तसेऽतो मातृपितृसेवा केनापि नैव त्याज्या । — तू माता-पिता-सेवा नहीं करता अतः कृतघ्न है माता-पिता-सेवा किसी को त्याज्य नहीं ।

३१– सायंकाल–कृत्य प्रकरणम्

इदानीन्तु सन्ध्या-समय आगतः सायंसन्ध्यामुपास्य भोजनङ्कृत्वा भ्रमणङ्कुरुत । — अब तो सन्ध्या-समय आया, सन्ध्या उपासना, भोजन कर भ्रमण करो ।

अद्य त्वया कियत् कार्यं कृतम् ? — आज तूने कितना काम किया ?

एतावत् कृतमेतावदत्र शिष्टमस्ति । इतना किया, इतना शेष है ।
अद्य कियांल्लाभो व्ययश्च जातः । आज कितना लाभ और कितना व्यय हुआ ?
पञ्चशतानि मुद्रा लाभःसार्धद्विशते व्ययश्च । पाँच सौ रुपये लाभ और ढाई सौ व्यय ।
इदानीं सामगानं क्रियताम् । अब सामवेद का गान कीजिए ।
वीणादीनि वादित्राण्यानीयन्ताम् । आनीतानि । वीणादिक बाजे लाइये । लाये ।
वाद्यताम् । गीयताम् । बजाइये । गाइये ।
कस्य रागस्य समयो वर्तते ? षड्जस्य । किस राग का समय है ? षड्ज का ।
इदानीं तु दश-घटिका-प्रमिता रात्रिरागता, इस समय तो दस घड़ी रात आई,
शयीध्वम् । गम्यतां स्व-स्व-स्थानम् । सोइये । जाइये अपने अपने घर को ।
स्व-स्व-शय्यायां शयनङ्कर्तव्यम् अपने अपने पलङ्ग पर सोना चाहिए ।
सत्यम्, एवमेवेश्वर–कृपया सुखेन सत्य है, ऐसे ही ईश्वर की कृपा से सुख से
रात्रिर्गच्छेत्, प्रभातं भवेत् । रात जाये, सबेरा हो ।

३२— शरीरावयव प्रकरणम्

अस्य शिरः स्थूलं वर्तते । इसका सिर मोटा है ।
देवदत्तस्य मूर्धकेशाः कृष्णाः वर्तन्ते । देवदत्त के सिर में केश काले हैं ।
मम तु खलु श्वेता जाताः । मेरे तो सफेद हो गये ।
तवापि केशाः अर्धश्वेताः सन्ति । तेरे भी केश आधे सफेद हैं ।
अस्य ललाटं सुन्दरमस्ति । इसका माथा सुन्दर है ।
अयं शिरसा खल्वाटः । यह सिर से गंजा है ।
तस्योत्तमे भ्रुवौ स्तः । उसकी अच्छी भोहें हैं ।
श्रोत्रेण शृणोषि न वा ? शृणोमि । कान से सुनता है ? वा नहीं ? सुनता हूं ।
अनया स्त्रिया कर्णयोः प्रशस्तान्याभूषणानि इस स्त्री ने कानों में अच्छे आभूषण
धृतानि । किमयङ्कर्णाभ्यां वधिरोऽस्ति ? पहिने हैं क्या यह कानों से बहिरा है ?
वधिरस्तु न,परन्तु श्रवणे ध्यानं न ददाति। बहिरा तो नहीं; किन्तु सुननेमें ध्यान नहीं देता ।
अयं विशालाक्षः । त्वं चक्षुषा पश्यसि न वा?यह विशालनेत्र है। तू आँखसे देखता है वा नहीं?
पश्यामि,परन्त्विदानीं मन्ददृष्टिर्जातोऽहमस्मि।देखताहूं परन्तु अब मैं मन्ददृष्टि होगया हूं ।
इदानीन्ते रक्ते अक्षिणी कथं वर्तेते ? इस समय तेरी आँखें लाल क्यों हैं ?
यतो ऽहं शयनादुत्थितः । क्योंकि मैं सोने से उठा हूं ।

स काणो धूर्तोऽस्ति ।	वह काना धूर्त है।
द्रष्टव्यमयमन्धः सचक्षुष्कवत्कथङ्गच्छति ।	देखो यह अन्धा नेत्रवत्तुल्य कैसे जाता है।
तवाक्षिणी कदा नष्टे ?	तेरी आँखें कब नष्ट हुईं ?
यदाहं पञ्चवर्षोऽभूवम् ।	जब मैं पाँच वर्ष का हुआ था।
इदानीं मन्नेत्रे रोगो ऽस्ति	इस समय मेरे नेत्र में रोग है
स कथं निवर्त्स्यति ?	वह कैसे निवृत्त होगा ?
अंजनाद्यौषधसेवनेन निवर्त्तष्यते ।	अंजनादि औषध-सेवन से दूर होगा ।
तस्य नासिकोत्तमास्ति ।	उसकी नाक अति सुन्दर है ।
भवानपि शुकनासिकः ।	आप भी तोते की सी नाक वाले हैं।
घ्राणेन गन्धं जिघ्रसि न वा ?	नाक से गन्ध सूँघते हो वा नहीं ?
श्लेष्म कफत्वान् मया नासिकया गन्धो न प्रतीयते ।	सरदी कफ(जुकाम)होने से मुझे नाक से गन्ध की प्रतीति नहीं होती।
अयं पुरुषः सुकपोलोऽस्ति ।	यह पुरुष अच्छे गाल वाला है ।
अतिस्थूलत्वादस्य नाभिर्गम्भीरा ।	बहुत मोटाई से इसकी नाभि गहरी है।
त्वमद्य प्रसन्नमुखो दृश्यसे, किमत्र कारणम् ?	तू आज प्रसन्न-मुख दिखाई देता है इसमें क्या कारण है ?
अयं ..दाह्लादित वदनो विद्यते ।	यह सदा प्रसन्नमुख रहता है ।
अस्यौष्ठौ श्रेष्ठौ वर्त्तेते ।	इसके ओठ बहुत अच्छे हैं ।
अयं लम्बौष्ठत्वाद भयङ्करोऽस्ति ।	यह लम्बे ओठ होने से भयङ्कर है।
सर्वैर्जिह्वया स्वादो गृह्यते ।	सब जीभ से स्वाद लेते हैं ।
वाचा सत्यं प्रियं मधुरं सदैव वाच्यम् ।	वाणी से सत्य-प्रिय-मधुर सदा ही बोले।
नैव केनचित्खल्वनृतादिकं वक्तव्यम् ।	किसी को भी झूट न बोलना चाहिए।
अयं सुदन् वर्त्तते ।	यह अच्छे दाँतों वाला है।
तव दन्ताः दृढाः सन्ति चलिताः वा ।	तेरे दाँत दृढ़ हैं वा हिल गये ?
मम दृढाः अस्य तु त्रुटिताः सन्ति ।	मेरे दृढ़; इसके तो टूट गये हैं।
मन्मुख एकोऽपि दन्तो नास्त्यतः कष्टेन भोजनादिकङ्करोमि ।	मेरे मुख में एक भी दांत नहीं है इससे कष्ट से भोजनादि करता हूं ।
अस्य श्मश्रूणि लम्बीभूतानि सन्ति ।	इसकी मूछें लम्बी हैं ।

तव चिबुकस्योपरि केशाः न्यूनाः सन्ति ।	तेरी ठोड़ी के ऊपर बाल थोड़े हैं ।
त्वया कण्ठे इदङ्किमर्थं बद्धम् ?	तूने गले में यह किसलिए बांधा है ?
अस्योरू विस्तीर्णौ स्तः ।	इसकी जाँघें विस्तीर्ण हैं ।
त्वया हृदये किं लिप्तम् ?	तूने हृदय पर क्या लेपा है ?
इदानीं हेमन्तोऽस्त्यतःकुंकुमकस्तूर्यौ लिप्ते	अब हेमंत है अतःकेसरकस्तूरी लेते हैं ।
तथा हृच्छूल निवारणार्थौषधम् ।	तथा हृदयशूल-निवारणार्थ औषध ।
माणवकः स्तनाद् दुग्धं पिबति ।	लड़का स्तन से दूध पीता है ।
पश्य, देवदत्तोऽयं लम्बोदरो वर्त्तते ।	देख, यह देवदत्त लम्बे पेट वाला है ।
अयन्तु खलु क्षामोदरः ।	यह तो छोटे पेट वाला है ।
तव पृष्ठे किं लग्नमस्ति ?	तेरी पीठ में क्या लगा है ?
किं स्कन्धाभ्यां भारं वहसि ?	क्या तू कन्धों से भार उठाता है ?
पश्यास्य क्षत्रियस्य बाह्वोर्बलं	देख इस क्षत्रिय की बाहों का बल
येन स्वभुजबलप्रतापेन राज्यं वर्द्धितम् ।	जिसने अपने बाहुबल से राज्य बढ़ाया ।
मनुष्येण हस्ताभ्यामुत्तमानि धर्मकार्याणि	मनुष्य को हाथों से उत्तम धर्मकार्य
सेव्यानि, नैव कदाचिदधर्म्याणि ।	सेव्य हैं, कभी अधर्मयुक्त नहीं ।
अस्य करपृष्ठे करतले च घृतं लग्नमस्ति ।	इसको हाथ की पीठ और तलपर घी लगा है।
मुष्टिबन्धाने सत्येकत्राङ्गुष्ठ एकत्र	मुट्ठी बांधने पर एकत्र अङ्गूठा,
एकत्र चतस्रोऽङ्गुलयो भवन्ति	एकत्र चार अँगुलियाँ होती हैं ।
शरीरस्य मध्यभागे नाभिः पुरतः	शरीर के मध्यभाग में नाभि सामने
पश्चिमतवः कटिः कथ्यते ।	पीछे का भाग कमर कहाता है।
अयं मल्लः स्थूलोरुः ।	यह पहलवान मोटी जाँघ वाला है ।
माणवको जानुभ्याञ्चचलति ।	लड़का घुटनों से चलता है,
अद्यातिगमनेन जङ्घे पीडिते स्तः ।	आज अतिगमन से जङ्घा दुखती हैं
अहं पद्भ्यां ह्यो ग्राममगमम् ।	मैं पैदल कल गांव गया था ।
अस्य शरीरे दीर्घाणि लोमानि सन्ति ।	इसके शरीर में लंबे रोम हैं ।
तव शरीरे न्यूनानि सन्ति ।	तेरे शरीर में कम हैं ।
अस्य शरीर-चर्म श्लक्ष्णं वर्त्तते ।	इसके शरीर का चमड़ा चिकना है ।
पश्यास्य नखा आरक्ताः सन्ति ।	देख, इसके नख कुछ-कुछ लाल हैं ।

अयं दक्षिणेन हस्तेन भोजनं करोति वामेन जलं पिबति।	यह दाहिने हाथ से भोजन करता है बाएँ से जल पीता है।
इदानीं त्वया श्रमः कृतो ऽस्त्यतो धमनी शीघ्रञ्चलति।	इस समय तू ने श्रम किया है अतः नाड़ी शीघ्र चलती है।
अधुना तु ममान्तस्त्वग् दह्यते अस्थिषु पीडापि वर्त्तते।	इस समय मेरे भीतर की त्वचा जलती है हड्डियों में पीड़ा भी है।

शब्द-संख्या— पहले के २३५ में नये २९ जोड़ कर सब २६४ संस्कृत शब्द हुए।

शब्द-रूप २२— गौ (गाय-बैल)। २३— उपानत् (जूता)

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
१	गौः	गावौ	गावः	उपानत्	उपानहौ	उपानहः
२	गाम्	,,	गाः	उपानहम्	,,	,,
३	गवा	गोभ्याम्	गोभिः	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
४	गवे	,,	गोभ्यः	उपानहे	,,	उपानद्भ्यः
५	गोः	,,	,,	उपानहः	,,	,,
६	,,	गवोः	गवाम्	,,	उपानहोः	उपानहाम्
७	गवि	,,	गोषु	उपानहि	,,	उपानत्सु
सम्बोधन	हे गौ	हे गावौ	हे गावः	हे उपानत्	हे उपानहौ	हे उपानहः

३३— राजसभा-प्रकरणम्

तिष्ठ भो देवदत्त! त्वया सह गच्छामि राजसभाम्।	रुक देवदत्त! तेरे साथ राजसभा को जाता हूं।
'सभा' शब्दस्य कः पदार्थः?	'सभा' शब्द का क्या पदार्थ है?
या सत्यासत्य-निर्णयाय प्रकाश-युक्ता वर्त्तेत।	जो सच-झूट-निर्णयार्थ प्रकाश-युक्त हो।
तत्र कति सभासदः सन्ति? सहस्रम्।	वहाँ कितने सभासद् हैं? एक हजार।
या मम ग्रामे सभास्ति तत्र खलु पञ्च-शतानि सभासदः सन्ति।	जो मेरे गाँव में सभा है वहाँ तो पाँच सो सभासद् हैं।
इदानीं सभायां कस्य विषयस्योपरि विचारः कर्त्तव्यः? युद्धस्य।	इस समय सभा में किस विषय पर विचार करना चाहिए? युद्ध का।
तेन सह युद्धं कर्त्तव्यं न वा?	उसके साथ युद्ध करना चाहिए वा नहीं?
यदि कर्त्तव्यं तर्हि कथम्?	यदि करना चाहिए तो कैसे?
यदि स धर्मात्मा, तदा तु न कर्त्तव्यम्।	यदि वह धर्मात्मा, तब तो न करना चाहिए।
पापिष्ठश्चेत्तर्हि तेन सह योद्धव्यमेव।	यदि पापी, तो उसके साथ लड़ना ही चाहिए।
सो ऽन्यायेन प्रजा भृशं पीडयत्यतो महापापिष्ठः।	वह अन्याय से प्रजा को बहुत पीडा देता है इससे महा पापी है।
एवं चेत्तर्हि शस्त्रास्त्र-प्रक्षेप-युद्ध-कुशला बलिष्ठा कोश-धान्यादि-सामग्री-सहिता सेना युद्धाय प्रेषणीया।	यदि ऐसा है तो शस्त्रास्त्र चलाने, युद्ध में कुशल बली कोश-अन्नादि-सामग्री-सहित सेना युद्ध के लिए भेजनी चाहिए।

सत्यमेवात्र वयं सर्वे सम्मतिं दद्मः ।	सच है, इसमें हम सब सम्मति देते हैं ।
इदानीङ्कस्यां दिशि कैः सह युद्धं प्रवर्तते ?	अब किस दिशा में किसके साथ युद्ध होता है?
पश्चिमायां दिशि यवनैः सह हरिवर्षस्थानाम् ।	पश्चिम दिशा में यवनों से यूरोपियनों का ।
पराजिता अपि यवना अद्याप्युपद्रवं न त्यजन्ति।	हारे भी यवन आज भी उपद्रव नहीं छोड़ते ।
अयं खलु पशु-पक्षिणामपि स्वभावोऽस्ति	यह तो पशु-पक्षियों का भी स्वभाव है कि
यदा कश्चित् तद् गृहादिकङ्ग्रहीतुमिच्छेत्	जब कोई उनके घर आदि छीन लेना चाहे
तदा यथाशक्ति युध्यन्त एव ।	तब यथाशक्ति लड़ते ही हैं ।

३४ ग्राम्य-पशु प्रकरणम्

भो गोपाल ! गाः वने चारय ।	हे अहीर ! गौओं को वन में चरा ।
तत्र याः धेनवस् ताभ्योऽर्द्धं दुग्धं त्वया	वहाँ जो नई ब्यानी गौएँ हैं उनसे आधा दूध
दुग्ध्वा स्वामिभ्यो देयं तदर्द्धं च	तू दुहकर मालिकों को देना और उसका
वत्सेभ्यः पाययितव्यम् ।	आधा बछड़ों को पिलाना चाहिए ।
एतौ वृषभौ रथे योक्तुं योग्यौ स्तः ।	ये दो बैल रथ में जोतने के योग्य हैं ।
इमौ हले खलु ।	ये दोनों हल में ही निश्चय ।
पश्येमाः स्थूला महिष्यो वने चरन्ति ।	देख ये मोटी भैंसें वन में चरती हैं ।
आगच्छ भो ! द्रष्टव्यम्, महिषाणां युद्धं	आओ जी देखो, भैंसों का युद्ध
परस्परङ्कीदृशं भवति ।	आपस में कैसा हो रहा है !
अस्य राज्ञो बहव उत्तमा अश्वाः सन्ति।	इस राजा के बहुत से उत्तम घोड़े हैं ।
किमियं राज्ञः सतुरङ्गा सेना गच्छति ?	क्या यह राजा की घोड़ोंसहित सेना जाती है ?
श्रोतव्यम्, हरयः कीदृशं ह्रेषन्ते !	सुनो, घोड़े कैसे हिनहिनाते हैं !
यथा हस्तिनो स्थूलाःसन्ति तथा हस्तिन्योपि ।	जैसे हाथी मोटे हैं वैसे हथिनियाँ भी ।
नागास् समञ्चछन्ति ।	हाथी बराबर चाल से चलते हैं ।
शृणु, करिणः कीदृशं बृंहन्ति !	सुन, हाथी कैसे चिंहारते हैं ।
पश्येमे गजोपरि स्थित्वा गच्छन्ति ।	देख, ये हाथी पर बैठकर जाते हैं ।
अस्य राज्ञः कतीभास् सन्ति? ५ सहस्राणि ।	इस राजा के कितने हाथी हैं ? ५ हजार ।
रात्रौ श्वानो बुक्कन्ति ।	रात में कुत्ते भूकते हैं ।
प्रातः कुक्कुटाः संप्रवदन्ति ।	सवेरे मुरगे बोलते हैं ।
मार्जारो मूषकानत्ति ।	बिलाव चूहों को खाता है ।

कुलालस्य गर्द्दभा अति स्थूलाः सन्ति ।	कुम्हार के गदहे अत्यन्त मोटे हैं ।
शृणु, लम्बकर्णा रासभा रासन्ते ।	सुन, लम्बे कानों वाले गदहे बोलते हैं ।
ग्राम्यशूकराः पुरीषं भक्षयित्वा भूमिं शुन्धन्ति ।	गांव के सूअर मैला खाके भूमि को शुद्ध करते हैं ।
उष्ट्रा भारं वहन्ति ।	ऊंट बोझ ढोते हैं ।
अजाविपालोऽजा अवीर्दोग्धि ।	गड़रिया बकरी-भेड़ों को दुहता है ।
पशवोऽपुर्नद्यां जलम् ।	पशुओं ने नदी में जल पिया था ।
रक्तमुखो वानरोऽतिदुष्टो भवति कृष्णमुखस्तु श्रेष्ठः खलु ।	लाल मुख का बन्दर बड़ा दुष्ट और काले मुंह का लंगूर तो अच्छा होता है ।
वानरी मृतकमपि बालकं न त्यजति ।	बन्दरी मरे हुये बच्चे को भी नहीं छोड़ती ।
गोपालेन गावो दुग्धाः पयो न वा ?	ग्वाले ने गौओं से दूध दुहा वा नहीं ?
कपिलाया गोर्मधुरं पयो भवति ।	कपिला गाय का दूध मीठा होता है ।
अयं वृषभः कियता मूल्येन क्रीतः ?	यह बैल कितने मोल से खरीदा है ।
शतेन रूप्यैः ।	सौ रुपयों से ।
कतिभिः पणैः प्रस्थं पयो मिलति ?	कितने पैसे सेर दूध मिलता है ?
द्वाभ्यां पणाभ्याम् ।	दो पैसों से ।
पश्य देवदत्त ! वानराः कथमुत्प्लवन्ते !	देख, देवदत्त ! बन्दर कैसे कूदते है !
अयं महाहनुत्वाद्धनुमान्वर्त्तते ।	यह बड़ी ठोड़ीवाला होने से हनुमान् है ।

३५. ग्रामस्थपक्षिप्रकरणम्

एताभ्यां चटकाभ्यां प्रासादे नीडं रचितम् ।	इन चिड़ियों ने अटारी पर घोंसला बनाया है ।
अत्राण्डानि धृतानि ।	यहाँ अण्डे धरे हैं ।
इदानीं तु चाटकैरा अपि जाताः ।	अब तो चिड़ियों के बच्चे भी हो गये हैं ।
पश्य, विष्णुमित्र ! कुक्कुटयोर्युद्धम् ।	देख, विष्णुमित्र ! दो मुर्गों की लड़ाई ।
कुक्कुटी स्वान्यण्डानि सेवते ।	मुर्गी अपने अण्डों को सेवती है ।
पश्य, शुकानां समूहं यो विरुवन्नुड्डीयते ।	देख, सुग्गों के झुण्ड को जो चचेंता हुआ उड़ रहा है ।
रात्रौ काका न वाश्यन्ते ।	रात में कौवे नहीं बोलते हैं ।
अरे भृत्योड्डायय ध्वांक्षमनेन पातव्यजलपात्रे चञ्चुं निक्षिप्य जलं विनाशितम् ।	अरे नौकर ! कौवे को उड़ा दे, इसने पीने के जल के वर्तन में चोंच डालकर जल दूषित कर दिया ।
वायसेन बालकहस्ताद्रोटिका हृता ।	कौवे ने लड़के के हाथ से रोटी लेली ।
पश्य, कीदृशं काकोलूकिकं युद्धं प्रवर्त्तते ।	देख, किस प्रकार की कौवे और उल्लूओं की लड़ाई हो रही है ।
अनेन शुकहंसतित्तिरिकपोताः पालिताः ।	इसने सुग्गा, हंस, तीतर और कबूतर पाले हैं ।

३६. वन्यपशुप्रकरणम्

वने रात्रौ सिंहाः गर्जन्ति।	वन में रात के समय सिंह गर्जते हैं।
शार्दूलं दृष्ट्वा सिंहा निलीयन्ते।	शार्दूल को देखकर सिंह छिप जाते हैं।
ह्यः सिंहो गामहन्।	कल सिंह ने गौ को मार डाला।
परेद्युः विक्रमवर्मणा सिंहो हतः।	परसों विक्रमवर्मा ने सिंह मारा।
द्रष्टव्यं हस्तिसिंहरणम्।	देखना चाहिये हाथी और सिंह की लड़ाई।
जंगले हस्तियूथाः परिभ्रमन्ति।	जंगल में हाथियों के झुण्ड घूमते हैं।
इदानीमेव वृकेण मृगो गृहीतः।	अभी भेड़िये ने हिरन पकड़ लिया।
अयं कुक्कुरो बलवाननेन सिंहेन सहाप्याजिः कृता।	यह कुत्ता बड़ा बलवान् है, इसने सिंह के साथ भी लड़ाई की।
पश्य सिंहवराहसंग्रामम्।	देख सिंह और शूकर का युद्ध।
शूकरा इक्षुक्षेत्राणि भक्षयित्वा विनाशयन्ति।	शूकर ऊख के खेतों को खाकर नष्ट कर देते हैं।
पश्य, वेगेन धावतो मृगान्।	देख, वेग से दौड़ते हुए हिरनों को।
अयं रुरुर्वृषभवत् स्थूलोऽस्ति।	यह काला हिरन बैल के समान मोटा है।
यो निलयादुत्प्लुत्य धावति स शशस्त्वया दृष्टो न वा?	जो भांटी से कूदता हुआ दौड़ता है वह खरहा तूने देखा है वा नहीं?
बहून् दृष्टवान्।	बहुतों को देखा है।
कदाचिद् भालवोऽपि दृष्टा न वा?	कभी रीछ भी देखे हैं वा नहीं?
एकदा ऋच्छेन साकं मम युद्धं जातम्।	एक समय रीछ के साथ मेरी लड़ाई हुई थी।
रात्रौ शृगालाः क्रोशन्ति।	रात्रि में सियार रोते हैं।
कदाचित्खड्गोऽपि दृष्टो न वा?	कभी गैंडा भी देखा वा नहीं?
ये आरण्या महिषा बलवन्तो भवन्ति, तान्कदाचिद् दृष्टवान्न वा?	जो अरणे भैंसे बलवान् होते हैं, उनको कभी देखा वा नहीं?

३७. वनस्थपक्षिप्रकरणम्

कदाचित् सारसावप्युड्डीयमानौ क्रीडन्तौ महाशब्दं कुरुतः।	कभी सारस पक्षी भी उड़ते हुए, क्रीडा करते हुए बड़ा शब्द करते हैं।
श्येनेनातिवेगेन वर्तिका हता।	बाज ने बड़े वेग से बटेर मारी।
शृणु, तित्तिरयः कीदृशं मधुरं नदन्ति।	सुन, तित्तिर किस प्रकार मधुर बोलते हैं।
वसन्ते पिकाः प्रियं कूजन्ति।	वसन्त में कोयलें प्रिय शब्द करती हैं।
काककोकिलवद् दुर्वचाः सुवाक् च मनुष्यो भवति।	कौवे और कोयल के सदृश दुष्ट और अच्छा बोलने वाला मनुष्य होता है।
अयं देवदत्तो हंसगतिः गच्छति।	यह देवदत्त हंस के समान चलता है।
पश्येमे मयूराः नृत्यन्ति।	देख, ये मोर नाचते हैं।
उलूका रात्रौ विचरन्ति।	उल्लू रात को विचरते हैं।

पश्य, बकः सरस्सु पाखंडिजनवत् मत्स्यान् हन्तुङ्कथं ध्यायति ! — देख, बगुला तालाबों में पाखंडी जन के तुल्य मछली मारने को किस प्रकार ध्यान कर रहा है !

बलाका अप्येवमेव जलजन्तून् घ्नन्ति । — बगुलियाँ भी इसी प्रकार जलजन्तुओंको मारती हैं।

पश्य कथञ्चकोरा धावन्ति ! — देख किस प्रकार चकोर दौड़ते हैं !

येऽत्यूर्ध्वमाकाशे गत्वा मांसाय निपतन्ति ते गृध्रास्त्वया दृष्टा न वा ? — जो बहुत ऊपर आकाश में जाकर मांस के लिए गिरते हैं वे गिद्ध तूने देखे हैं वा नहीं ?

मैनका मनुष्यवद् वदन्ति । — मैना मनुष्य के समान बोलती हैं ।

चिल्लिका माणवक-हस्ताद् रोटिकां छित्वोड्डीयते । — चील लड़के के हाथ से रोटी को छीन कर उड़ जाती है ।

३८ तिर्यग्जन्तु प्रकरणम्

सर्पाः शीघ्रं सर्पन्ति । — साँप शीघ्र सरकते हैं ।

अयङ्कृष्णः फणी महा-विष-धारी । — यह काला सांप बड़ा विष वाला है ।

भवता कदाचिदजगरोऽपि दृष्टो न वा ? — आपने कभी अजगर भी देखा है वा नहीं ?

पश्याहि-नकुलस्य संग्रामो वर्त्तते । — देख साँप और नेउले का युद्ध हो रहा है ।

स वृश्चिकेन दष्टो रोदति । — वह बिच्छू से काटा हुआ रोता है ।

इयङ्गोधा स्थूलाऽस्ति । — यह गोह मोटी है ।

मूषकाः विले शेरते । — चूहे बिल में सोते हैं ।

मक्षिकां भक्षयित्वा वमनं प्रजायते । — मक्खी को खाकर वमन हो जाता है ।

अत्र वासः कर्तव्यो निर्मक्षिकं वर्त्तते । — यहाँ वास करना चाहिए स्थान मक्खी-रहित है ।

मधुक्षिका-दशनेन शोथः प्रजायते । — मधुमक्खियों के काटने से सूजन हो जाती है ।

भ्रमरा गुंजन्तः पुष्पेभ्यो गन्धं गृह्णन्ति । — गूँजते हुए भौंरे फूलों से सुगन्धि को लेते हैं।

३९ जल-जन्तु प्रकरणम्

तिमिङ्गिलाः मत्स्या समुद्रे भवन्ति । — तिमिगिल मछलियाँ समुद्र में होती हैं ।

रोहित-सिंहतुण्ड-राजीवाश्च पुष्करिणी-नदी-तडाग-समुद्रेषु निवसन्ति । — रोहू सिंहतुंड और राजीव पुखरिया-नदी-तालाब-समुद्र में रहती हैं ।

मकरः पशूनपि गृहीत्वा निगलति । — मगर पशुओं को भी पकड़ कर निगल जाता है।

नक्रा ग्राहा अपि महान्तो भवन्ति । — नाका-घड़ियाल भी बड़े होते हैं ।

कूर्माः स्वाङ्गानि सङ्कोच्य प्रसारयन्ति । कछुए अपने अङ्गों को समेट कर फैलाते हैं।
वर्षासु मण्डूकाः शब्दयन्ति । वर्षा में मेंढक बोलते हैं ।
जल-मनुष्या अप्सु निमज्य तटे आसते । जलके मनुष्य जल में डूबकर तट पर बैठते हैं।

४० वृक्ष-वनस्पति प्रकरणम्

पिप्पलाः फलिता न वा ? पीपल फले हैं वा नहीं ?
इमे वटाः सुच्छायास् सन्ति । ये बड़ अच्छी छाया वाले हैं ।
पश्येम उदुम्बराः सफला वर्तन्ते । देख, ये गूलर फलयुक्त हो रहे हैं ।
इमे बिल्वाः स्थूलफलास् सन्ति । ये बेल बड़े—बड़े फल वाले हैं ।
ममोद्याने आम्राः पुष्पिताः फलिताः सन्ति । मेरे बाग में आम फूले फले हैं ।
इदानीं पक्वफला अपि वर्तन्ते । इस समय पके फलवाले भी हैं ।
अस्याम्रस्य मधुराणि रसवन्ति च फलानि भवन्ति । इस आम के मीठे और रसीले फल होते हैं ।
तस्य त्वम्लानि भवन्ति । उसके तो खट्टे होते हैं ।
पनसस्य महान्ति फलानि भवन्ति । कटहल के बड़े बड़े फल होते हैं ।
शिंशपायाः काष्ठानि दृढानि सन्ति शालस्य दीर्घाणि च । शीशम की लकड़ियाँ दृढ़ होती हैं और साखू की लम्बी ।
अस्य बर्बुरस्य कण्टकास् तीक्ष्णा भवन्ति । इस बबूल के कांटे तीखी अणीवाले होते हैं।
बदरीणां तु मधुराम्लानि फलानि कण्टकाश्च कुटिला भवन्ति । बेरियों के तो मीठे खट्टे फल और काटे टेढ़े होते हैं ।
कटुको निम्बो ज्वरं निहन्ति । कडुआ नीम ज्वर का नाश करता है ।
मातुलुंगकफलरसं सूपे निक्षिप्य भोक्तव्यम्। नींबू का रस दाल में डालकर खाने योग्य हैं।
मम वाटिकायां दाडिमफलान्युत्तमानि जायन्ते। मेरी बगिया में अनार अच्छे होते हैं ।
नारंगफलान्यानय । नारंगी के फलों को ला ।
वसन्ते पलाशाः पुष्प्यन्ति । वसन्त में ढाक फूलते हैं ।
उष्ट्राः शमीवृक्ष-पत्र-फलानि भुञ्जते । ऊँट शमीवृक्ष के पत्त-फल खाते हैं

४१ औषध प्रकरणम्

कदलीफलानि पक्वानि न वा ? केला के फल पके वा नहीं ?
तण्डुलादयस्तु वैश्यप्रकरणे लिखितास् तत्र द्रष्टव्याः। चावल आदि तो वैश्यप्रकरण में लिखे हैं वहाँ देख लेना।

विष-निवारणायाऽपामार्गमानय ।	विष दूर करने के लिए चिटचिटा ला ।
निर्गुण्ड्याः पत्राण्यानेयानि ।	निर्गुण्डी के पत्ते लाने चाहिए ।
लज्जावत्याः किं जायते ?	लाजवन्ती का क्या होता है ?
गुडूची ज्वरं निवारयति ।	गिलोय ज्वर को शान्त करती है ।
शंखावलीं दुग्धे पाचयित्वा पिबेत् ।	संखावली को दूध में पाक कर पिये ।
यथर्तुयोगं हरीतकी सेविता सर्वान् रोगान्निवारयति ।	ऋतु के योग के अनुसार सेवन की हुई हरड़ सब रोगों को छुड़ा देती है ।
शुण्ठी-मरीच-पिप्पलीभिः कफ-वातरोगौ निहन्तव्यौ ।	सोंठ-मिर्च और पीपल से कफ और वात रोगों का नाश करना चाहिए ।
योऽश्वगन्धं दुग्धे पाचयित्वा पिबति स पुष्टो जायते ।	जो असगन्ध को दूध में पका कर पीता है वह पुष्ट होता है ।
इमानि कन्दानि भोक्तुमर्हाणि वर्तन्ते ।	ये कन्द खाने के योग्य हैं ।
एतेषां तु शाकमपि श्रेष्ठं जायते ।	इनका तो शाक भी अच्छा होता है ।
अस्यां वाटिकायां गुल्मलताः प्रशंसनीयाः सन्ति ।	इस बगीचे में पौध-लताएँ प्रशंसनीय हैं ।

४२. आत्मीय-प्रकरणम्

तव ज्येष्ठो बन्धुर्भगिनी च कास्ति ?	तेरा बड़ा भाई व बहिन कौन है ?
देवदत्तस् सुशीला च ।	देवदत्त और सुशीला ।
भो बन्धो ! अहं पाठाय व्रजामि ।	हे भाई ! मैं पढ़ने को जाता हूं ।
गच्छ प्रिय, पूर्णां विद्यां कृत्वागन्तव्यम् ।	जा प्यारे, पूरी विद्या करके आना ।
भवतः कन्या अद्यश्वः किं पठन्ति ?	आपकी बेटियाँ आज-कल क्या पढ़ती हैं ?
वर्णोच्चारणशिक्षादिकं दर्शनशास्त्राणि चाधीत्येदानीं धर्मपाकशिल्पगणितविद्या अधीयते ।	वर्णोच्चारणशिक्षादिक तथा दर्शन शास्त्र पढ़कर अब धर्म-पाक-शिल्प-गणित विद्या पढ़ती हैं ।
भवज्ज्येष्ठया भगिन्या किङ्किमधीतम्, इदानीञ्च तया किं क्रियते ?	आप की बड़ी बहिन ने क्या क्या पढ़ा है और अब वह क्या करती है ?
वर्णज्ञानमारभ्य वेदपर्यन्ताः सर्वा विद्या विदित्वेदानीं बालिकाः पाठयति ।	अक्षराभ्यास से लेकर वेद तक सब विद्या पढ़कर अब कन्याओं को पढ़ाया करती है ।
तया विवाहः कृतो न वा ?	उसने विवाह किया वा नहीं ?

इदानीं तु न कृतः परन्तु वरं परीक्ष्य स्वयंवरं कर्तुमिच्छति ।	अभी तो नहीं किया, किन्तु वर की परीक्षा करके स्वयंवर करना चाहती है
यदा कश्चित् स्वतुल्यः पुरुषो मिलिष्यति तदा विवाहङ्करिष्यति ।	जब कोई अपने सदृश पति मिलेगा तब विवाह करेगी ।
तव मित्रैरधीतं न वा ?	तेरे मित्रों ने पढ़ा है वा नहीं ?
सर्व एव विद्वांसो वर्त्तन्ते यथाहं तथैव तेऽपि, समानस्वभावेषु मैत्र्यास्सम्भवात् ।	सब ही विद्वान् हैं, जैसा मैं हूं वैसे ही वे भी, समानस्वभावोंमें मैत्री संभव होने से
तव पितृव्यः किङ्करोति? राज्यव्यवस्थाम् ।	तेरा चाचा क्या करता है? राज्य की व्यवस्था।
इमे किन्तव मातुलादयः ?	ये क्या तेरे मामा आदि हैं ?
बाढमयं मम मातुल इयं पितृष्वसेयं मातृष्वसेयं गुरुपत्न्ययञ्च गुरुः ।	ठीक, यह मेरा मामा, यह बुआ, यह मौसी, यह गुरु-पत्नी और यह गुरु है ।
इदानीमेते कस्मै प्रयोजनाय कत्र मिलिताः?	इस समय ये किस प्रयोजनके लिए एकत्र मिले
मया सत्कारायाहूताः सन्त आगताः ।	मुझसे सत्कार के लिए बुलाए हुए आये हैं ।
इमे मे मातामह-श्वसुर-श्यालादयः सन्ति ।	ये मेरे नानी-ससुर-साले आदि हैं ।
इमे मम मित्रस्य स्त्री-भगिनी-दुहितृ-जामातारः सन्ति ।	ये मेरे मित्र की स्त्री-बहिन-लड़की-जमाई हैं ।
इमौ मम पितुः श्याल-दौहित्रौ स्तः ।	ये दो मेरे पिता के साले-धेवता हैं ।

४३ सामन्त प्रकरणम् ।

त्वद्गृह-निकटे के के निवसन्ति ?	तेरे घर के पास कौन कौन रहते हैं ?
ब्राह्मण-क्षत्रिय-विट्-शूद्राः ।	ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र ।
इमे राज-समीप-निवासिनः ।	ये राजा के समीप-रहने वाले हैं ।

४४ कारु प्रकरणम् ।

भोस् तक्षन् ! त्वया नौ-विमान-रथ-शकट-हलादीनि निर्माय तत्र प्रशस्तानि कला-कील-शलाकादीनि संयोज्य दातव्यानि ।	हे बढ़ई ! तुझको नाव-विमान-रथ-गाड़ी-हल आदि रचके, वहाँ अति उत्तम कलायन्त्र-कील-काँटे आदि संयुक्त करके देने चाहिए ।
इदङ्काष्ठं छित्वा पर्यङ्कं रचय ।	इस लकड़ी को काट कर पलङ्ग बना ।
अस्मात् कपाटाः सम्पादनीयाः ।	इस से किवाड़ बनाने चाहिए ।

इमं वृक्षङ्किमर्थं छिनत्सि ?	इस वृक्ष को किसलिए काटता है ?
मुषलोलूखलयोर्निर्माणाय ।	मूसल और ऊखल बनाने के लिए ।

४५ अयस्कार प्रकरणम् ।

भो अयस्कार!त्वयास्यायसो वाणासिशक्ति-तोमरमुद्गरशतघ्निभुशुण्ड्यो निर्मातव्याः एतस्य क्षुरादीनि च ।	हे लोहार ! तुझको इस लोहे के वाण-तलवार बरछी,तोमर,मुग्दर,बन्दूक,तोप बनाने चाहिए और इसके छुरे आदि ।
इमौ कलशकटाहौ त्वया विक्रीयेते न वा ?	ये कलसा-कड़ाही तुझको बेचने हैं वा नहीं ?
विक्रीणामि ।	बेचता हूं ।
एतान् कील-कण्टकान् किमर्थं रचयसि ?	ये कील—काँटे किसलिए बनाता है ?
विक्रयणाय ।	बेचने के लिए ।

४६ सुवर्णकार प्रकरणम् ।

त्वया सुवर्णादिकं नैव चोर्यम् ।	तू सोना आदि मत चुराना ।
आभूषणान्युत्तमानि निर्मिमीष्व ।	गहने अच्छे सुन्दर बना ।
अस्य हारस्य कियन्मूल्यमस्ति ?	इस हार का कितना मोल है ?
पञ्च सहस्राणि राजत्यो मुद्राः ।	पाँच हजार रुपये ।
इमौ कुण्डलौ त्वया श्रेष्ठौ रचितौ, वलयौ तु न प्रशस्तौ ।	ये कुण्डल तूने अच्छे बनाये परन्तु कड़े तो अच्छे नहीं ।
एतान्यङ्गुलीयकानि मुक्ताप्रवालहीरक-नील मणि जटितानि सम्पादय ।	ये अङ्गूठियाँ मोती-मूँगा-हीरा और नीलमणि से जड़ी हुई बना ।
एतेनालङ्कारा अत्युत्तमा रच्यन्ते ।	इससे गहने बहुत अच्छे बनते हैं ।
नासिका-भूषणं सद्यो निष्पादय ।	नथुनी शीघ्र बना दे ।
इदं मुकुटं केन रचितम् ? शिवप्रतापेन ।	यह मुकुट किसने बनाया ? शिवप्रताप ने ।
अस्य सुवर्णस्य कटक-कङ्कण-नूपुरान् निर्माय सद्यो देहि ।	इस सोने के कड़ा-कङ्कणी वा कङ्गना और बिछिया बनाके शीघ्र दे ।

४७ कुलाल प्रकरणम् ।

भो कुलाल ! कुम्भ-शराव-मृद्गवकान् निर्मिमीष्व, घटं देह्यनेन जलमानेष्यामि ।	अरे कुम्हार ! घड़ा-सरवा—मिट्टी की गौओं को बना, घड़ा दे इससे जल लाऊँगा ।

४८ तन्तुवाय प्रकरणम् ।

भो तन्तुवाय!अस्य सूत्रस्य पटशाटयुष्णीषाणि वय।	ओ कोरी!इस सूतके पटका-साड़ी-पगड़ी बुन ।

४९ सूचीकार प्रकरणम् ।

भो ! सूच्या किं सीव्यसि ?	अरे ! सूई से क्या सता है ?
शिरोऽङ्गरक्षणाधोवस्त्राणि सीव्यामि ।	टोपी-अँगरखा-पाजामा सीता हूं ।

५० मिश्रित प्रकरणम् ।

भो कारुक ! कटं वय ।	अरे चटाई वाले ! चटाई बुन ।
ईमे व्याधाः मृगादीन् पशून् घ्नन्ति ।	ये बहेलिए हिरन आदि पशुओं को मारते हैं ।
किराता वने निवसन्ति ।	किरात लोग वन में रहते हैं ।
सकमला न सरांसि कुत्र सन्ति ?	कमल वाले तालाब कहाँ हैं ?
इमे तडागाः ग्रीष्मे शुष्यन्ति ।	ये तालाब गरमी में सूख जाते हैं ।
कूपाज्जलमानय ।	तू कूएँ से जल ला ।
अद्य वाप्यां स्नातव्यम् ।	आज बावडी में नहाना चहिए ।
रञ्जकेन शतघ्नि-भुशुण्ड्यादयश्च चलन्ति ।	बारूद से बन्दूक-तोपें आदि चलती हैं ।
अयं कम्बलस् त्वया कस्माद् गृहीतः ?	यह कम्बल तूने किससे लिया ?
कस्मै प्रयोजनाय च ?	और किस प्रयोजन के लिए ?
कश्मीराच्छीतनिवारणाय ।	कश्मीर से जाड़े के छुड़ाने के लिए ।
पश्य, माड़वकाः क्रीडन्ति ।	देख; लड़के खेलते हैं ।
अस्मिन् गृहे स्रस्तराणि श्रेष्ठानि सन्ति ।	इस घर में बिछौने अच्छे हैं ।
इमे चोराः पलायन्ते ।	ये चोर लोग भागे जाते हैं ।
तत्र दस्युभिरागत्य सर्वं धनं हृतम् ।	वहाँ डाकू लोगों ने आकर सब धन हर लिया
द्वापरान्ते युधिष्ठिरादयो बभूवुः ।	द्वापर के अन्त में युधिष्ठिर आदि हुए थे ।
मम पादे कण्टकः प्रविष्ट एनमुद्धर ।	मेरे पैर में काँटा घुस गया, इस को निकाल ।
केशान् संवय ।	बालों को सँभाल ।
भो नापित! नखान्छिन्धि,मुण्डय शिरःश्मश्रूणि च ।	ओ नाउ ! नखों को काट,सिर और मूछों को मूंड ।
अयं शिल्पी प्रासादमत्युत्तमं रचयति ।	यह शिल्पी राज-महल को बहुत अच्छा बनाता है ।
अयं कोटपालो न्यायकारी वर्त्तते ।	यह कोतवाल न्यायकारी है ।
स तु धर्मात्मा नैवास्त्यन्यायकारित्वात् ।	वह(दूसरा) तो धर्मात्मा नहीं है अन्यायकारी होने से ।
एते राजमन्त्रिणः कुत्र गच्छन्ति ?	ये राजा के मन्त्री कहाँ जाते है ?
राज-सभां न्याय-करणाय यान्ति ।	राज-सभा को न्याय करने के लिए जाते हैं ।
भोस् ताम्बूलानि देहि । ददामि ।	अरे ! पान दे । देता हूं ।
भो तैलकार! तिलेभ्यस्तैलं निःसार्य देहि । दास्यामि ।	अरे तेली! तिलों से तैल निकालकर दे । दूँगा ।
अरे रजक ! वस्त्राणि प्रक्षाल्य सद्यो देयानि ।	ओ धोबी ! कपड़ों को धोकर शीघ्र देना ।
कपाटान् बधान ।	किवाड़ों को बन्द कर ।
इदानीं प्रातः कालो जातः; कपाटानुद्घाटय ।	इस समय सबेरा हुआ, किवाड़ों को खोल ।

सर्वे युद्धाय सज्जा भवन्तु ।	सब लड़ाई के लिए तैयार हों ।
अर्थि-प्रत्यर्थिनौ राजगृहे युध्येते ।	मुद्दई-मुद्दायले कचहरी में लड़ते हैं ।
किमियङ्गोधूमान् पिनष्टि ?	क्या यह गेहुंओं को पीसती है ?
कुतोऽद्य दुर्गे शतघ्न्यश् चलन्ति ?	क्यों आज क़िले में तोपें चलती हैं ?
तेन भुशुण्ड्या सिंहो हतः ।	उसने बन्दूक से शेर को मारा ।
तेनासिना तस्य शिरश् छिन्नम् ।	उसने तलवार से उसका सिर काट डाला ।
अञ्जनङ्किमर्थमनक्षि ?	तू अञ्जन किसलिए आँजता है ?
उपानहौ धृत्वा क्व गच्छसि ? जङ्गलम् ।	तू जूते पहिनकर कहाँ जाता है ? जङ्गल को ।
किं स्थाल्यामोदनं पचसि सूपं वा ?	क्या बटुए में भात पकाता है या दाल ?
कटाहे शाकं पच ।	कड़ाही में तरकारी पका ।
विरुद्धं वदिष्यसि चेत्तर्हि दन्तांस्त्राटयिष्यामि ।	विरुद्ध बोलेगा तो दाँत तोड़ डालूँगा ।
तव पितुस्तु सामर्थ्यं नाभूत्तव तु का कथा!	तेरे बापका तो सामर्थ्य न था तेरी तो क्या कथा
येन प्रजा पाल्यते स कथन्न स्वर्गङ्गच्छेत् ?	जिसने प्रजा पाली वह स्वर्ग क्यों न जाय ?
यो राज्यं पीडयेत्स कथन्न नरके पतेत् ?	जो राज्य को पीडा दे वह क्यों न नरक में [illegible] ?
येनेश्वरउपास्यते तस्य विज्ञानंकुतो न वर्धेत?	जो ईश्वरोपासना करे उसका ज्ञान क्यों न बढ़े
यः परोपकारी, स सततङ्कथन्न सुखी भवेत् ?	जो परोपकारी है, वह सदा क्यों न सुखी हो ?
अस्यां मञ्जूषायाङ्किमस्ति ? वस्त्र-धने ।	इस सन्दूक में क्या है ? वस्त्र और धन ।
इदानीमपि कुम्भ्यां धान्यं वर्तते न वा ?	अब भी कोठी में अन्न है वा नहीं ?
स्वल्पमस्ति ।	बहुत कम है ।
त्वमालसी तिष्ठसि, कुतो नोद्योगङ्करोषि?	तू आलसी रहता, उद्योग क्यों नहीं करता ?
उभयत्र प्रकाशाय देहल्यां दीपं निधेहि ।	दोनों ओर प्रकाशार्थ देहली पर दिया रख ।
तेनासि-चर्मभ्यां शतेन सह युद्धं कृतम् ।	उसने तलवार-ढाल से सौ के साथ युद्ध किया ।
अतिथीन् सेवसे न वा ?	अतिथियों की सेवा करता है वा नहीं ?
प्रेक्षा-समाजं मा गच्छ ।	मेले-तमाशे में मत जा ।
द्यूत-समाह्वयौ कदापि न सेवनीयौ ।	जुआ, दाँव(प्राणी का) कभी न सेवना चाहिए ।
यो मद्य[illegible]स्ति तस्य बुद्धिः कथं न ह्रसेत् ?	जो शराबी है उसकी बुद्धि क्यों न कम हो ?
यो [illegible]रीस्स रुग्णः कथं न जायेत ?	जो व्यभिचार करे वह रोगी क्यों न हो ?
यो जितेन्द्रियः स सर्वङ्कर्तुङ्कुतो न शक्नुयात् ?	जो जितेन्द्रिय, वह सब काम क्यों न कर सके

योगाभ्यासः कृतो येन ज्ञानदीप्तिर्भवेन्नरः । जिसने योगाभ्यास किया वह नर ज्ञान-दीप्त हो ।
वस्त्र-पूतं जलं पेयं मनः-पूतं समाचरेत् । वस्त्र से छना जल पियें; मन से पवित्र काम करे ।
स भ्रान्तौ कदापि न पतेत् । वह भ्रम-जाल में कभी नहीं गिरे ।
अयं वाचालोऽस्त्यतो बरबरायते । यह बहुत बोलनेवाला है इसी से बड़बड़ाता है ।
भूमितले किमस्ति ? मनुष्यादयः । भूमि के तल पर क्या है ? मनुष्य आदि ।
यः पद्भ्यां भ्रमति सोऽरोगो जायते । जो पैरों से घूमता है वह नीरोग होता है ।
व्यजनेन वायुङ्कुरु । पंखे से हवा कर ।
किङ्कर्मादागतोऽसि यत्स्वेदो जातोऽस्ति ? क्या काम से आ रहा है जो पसीना हो रहा है ?
स्वस्थे शरीरे नित्यं स्नात्वा मितं भोक्तव्यम् । स्वस्थ शरीर होने पर रोज नहा कर परिमित [नपा तुला] खाना चाहिए ।
जल–वायू शुद्धौ सेवनीयौ जल और वायु शुद्ध सेवन करना चाहिए ।
सर्वर्तु के शुद्धे गृहे निवसनीयम् । सब ऋतुओं में सुखद शुद्ध घर में रहना चाहिए ।
नैव केनचिन्मलीनानि वस्त्राणि धार्याणि । किसी को मैले वस्त्र न पहिनने चाहिए ।
तव का चिकीर्षास्ति ? तेरी क्या करने की इच्छा है ?
गृहङ्गत्वा भोक्तुम् । घर जाकर खाने की ।
त्वं सक्तु भुङ्क्षे न वा ? तू सत्तू खाता है वा नहीं ?
घृत-दुग्ध-मिष्टैः सहाद्मि । घी-दूध-मीठे के साथ खाता हूं ।
त्वयाम्रफलानि चूषितानि न वा ? तूने आम के फल चूसे वा नहीं ?
उर्वारुकफलान्यत्र मधुराणि जायन्ते । खरबुजे के फल यहाँ मीठे होते हैं ।
इक्षुभ्यो गुडादिकं निष्पद्यते । गन्नों से गुड आदि बनता है ।
इदानीमाकण्ठं दुग्धं पीतं मया । इस समय मैं ने गले तक दूध पिया ।
तक्रं देहि । मठा दे ।
अत्र श्वेता शर्करा वर्तते । यहाँ सफेद चीनी है ।
अयं रुच्या दध्नौदनं भुङ्क्ते । यह रुचि से दही से भात खाता है ।
अद्य मोदका भुक्ता न वा ? आज लड्डू खाये वा नहीं ?
त्वया कदाचित्कृशरापि भक्षिता न वा ? तू ने कभी खिचड़ी भी खायी वा नहीं ?
मयापूपा भक्षिताः । मैंने मालपूए खाये हैं ।
सशर्करं दुग्धं पेयम् । शक्कर-सहित दूध पीना चाहिए

येन धर्मः सेव्यते स एव सुखी जायते । जो धर्म का सेवन करता है वही सुखी होता है।

५१ लेख्य–लेखक–प्रकरणम्

मनुष्यो लेखाभ्यासं सम्यक् कुर्यात् । मनुष्य लेख का अभ्यास ठीक करे।

अयमत्युत्तममक्षर–विन्यासङ्करोति । यह अति उत्तम अक्षर लिखता है।

लेखनीं सम्पादय, मसीपात्रमानय, पुस्तकं लिख । कलम बना, दवात ला। पुस्तक लिख।

तत्र पत्रं लिखित्वा प्रेषितं न वा ? वहाँ पत्र लिख कर भेजा वा नहीं ?

प्रेषितं, पञ्च दिनानि व्यतीतानि; भेजा, ५ दिन बीते

तस्य प्रत्युत्तरमप्यागतम् । उसका जवाब भी आगया।

सुवर्णाक्षराणि लिखितुं जानासि न वा ? सुन्दरी अक्षर लिखना जानता है वा नहीं ?

जानामि तु परन्तु सामग्री-सञ्चयने जानता तो हूं परन्तु वस्तुएं इकट्ठी करने

लेखने च विलम्बो भवति । और लिखने में देर होती है ।

यद्यङ्गुष्ठ-तर्जनीभ्यां लेखनीङ्गृहीत्वा मध्यमो- जो अंगूठा-तर्जनी से कलम पकड़ कर लिखे

परि संस्थाप्य लिखेत्तर्हि प्रशस्तो लेखो जायेत । तो बहुत अच्छा लेख हो ।

अयमतीव शीघ्रं लिखति । यह अत्यन्त जल्दी लिखता है ।

एतस्य लेखनी मन्दा चलति । इसकी लेखनी धीरे चलती है ।

यदि त्वमेकाहं सततं लिखेस्तर्हि कि[illegible] यदि तू एक दिन निरन्तर लिखे तो कितने

श्लोकांल्लिखितुं शक्नुयाः ? श्लोक लिख सकता है?

पञ्चशतानि । पाँच सौ ।

यदि शिक्षाङ्गृहीत्वा शनैःशनैर्लिखितुमभ्यसेत् यदि शिक्षा ग्रहण कर धीरे धीरे लखका

तर्ह्यक्षराणांसुन्दरंस्वरूपंस्पष्टता च जायेत। अभ्यास करे तो अक्षरों का सुस्वरूप स्पष्टता हो

अस्मिंल्लाक्षारसे कज्जलं सम्मेलितं न वा? इस लाख के रस में काजल मिलाया वा नहीं ?

मेलितं तु न्यूनं खलु वर्तते । मिलाया तो है, परन्तु थोड़ा है ।

मनुष्यैर्यादृशः पठनाभ्यासः क्रियेत मनुष्य जैसा पढ़ने का अभ्यास करें

तादृश एव लेखनाभ्यासोऽपि कर्तव्यः । वैसा ही लेख का अभ्यास भी करना चाहिए।

मया वेदपुस्तकं लेखयितव्यमस्त्येकेन मुझको वेद का पुस्तक लिखाना है एक रुपये

रूप्येण कियतः श्लोकान् दास्यसि ? से कितने श्लोक देगा?

अत्युत्तमानि ग्रहीष्यसि चेत्तर्हि शतत्रयम् जो बहुत अच्छे लोगे तो तीन सौ,

मध्यमानि चेच्छतपञ्चकम्, साधारणानि मध्यम तो पाँच सौ, यदि साधारण

चेत्सहस्रं श्लोकान् दास्यामि । लोगे तो हजार श्लोक दूंगा ।

शतत्रयमेव ग्रहीष्यामि परन्त्वत्युत्तमं लिखित्वा दास्यसि चेत् ।
तीन सौ ही लूँगा परन्तु बहुत अच्छा लिख कर देगा तो ।

वरमेवङ्करिष्यामि ।
अच्छा, ऐसा ही करूँगा ।

५२ मन्तव्यामन्तव्य-प्रकरणम्

त्वं जगत्स्रष्टारं सच्चिदानन्दस्वरूपं परमेश्वरं मन्यसे न वा ?
तू संसार के बनाने वाले सच्चित् और आनन्द-स्वरूप परमेश्वर को मानता है वा नहीं ?

अयं नास्तिकत्वात् स्वभावात् सृष्ट्युत्पत्तिं मत्वेश्वरं न स्वीकरोति ।
यह नास्तिक होने से स्वभाव से सृष्टि की उत्पत्ति को मानकर ईश्वर को नहीं मानता ।

यद्ययङ्कर्तृकार्यरचक रचनाविशेषान्संसारे निश्चिनुयात्तर्ह्यवश्यं परमात्मानं मन्येत ।
जो यह कर्त्ता-क्रिया-बनाने वाला और बनावट संसार में निश्चय करे तो अवश्य ईश्वर को माने ।

योऽत्र सृष्टं रचितरचनां पश्यति स जीवः कार्यवत् स्रष्टारङ्कुतो न मन्येत ?
जो यहाँ सृष्टि में पदार्थों की बनावट को देखता है वह कारीगरी के समान उसके बनाने वाले को क्यों न माने ?

यत्रोत्तमा धार्मिका आस्तिका विद्वांसो अध्यापका उपदेष्टारश् च स्युस् तत्र कोऽपि कदाचिन्नास्तिको भवितुं नार्हेत ।
जहाँ श्रेष्ठ धर्मात्मा आस्तिक विद्वान् अध्यापक-उपदेशक हों वहाँ कोई कभी नास्तिक नहीं हो सकता ।

कैः कर्मभिर्मुक्तिर्भवति ? तदा क्व वसन्ति? तत्र किं भुज्यते च ?
किन कर्मों से मुक्ति होती है? तब कहाँ रहते और वहाँ क्या भोगते हैं ?

धर्म्यैर्कर्मोपासना_विज्ञानैर्मुक्तिर्जायते, तदानीं ब्रह्मणि निवसन्ति परमानन्दञ्च सेवन्ते ।
धर्मयुक्त कर्म-उपासना और विज्ञान से मोक्ष होता है । उस समय ब्रह्म में रहते

मोक्षं प्राप्य तत्र सदा वसन्त्याहोस्वित् कदाचित्ततो निवृत्य पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्ति?
मोक्ष पाकर वहाँ सदा रहते हैं अथवा कभी वहाँ से निवृत्त होकर पुनःजन्ममरण पाते हैं?

प्राप्तमोक्षा जीवास् तत्र सर्वदा न वसन्ति किन्तु महाकल्पपर्यन्तमर्थाद् ब्राह्ममायुर्यावत् तत्रोषित्वानन्दं भुक्त्वा पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्त्येव ।
मुक्ति को प्राप्त जीव वहाँ सर्वदा नहीं रहते किन्तु महाकल्प अर्थात् ब्राह्म आयु तक वहाँ वास कर आनन्द भोग कर फिर जन्म और मरण को अवश्य प्राप्त होते हैं ।

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिना निर्मितः संस्कृतवाक्यप्रबोधः समाप्तः ।